A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 25 नवम्बर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 85, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

धर्मेंद्रः फिल्मी और असल जिंदगी का जिंदादिल किरदार

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

हर दिल अजीज मशहूर अभिनेता धर्मेन्द्र के इस फानी दुनिया से कूच कर जाने की खबर इस बार गलत साबित नहीं हुई। 15 दिन पहले भी ऐसी ही खबर उड़ी थी, लेकिन तब उनके परिवार ने पुष्टि नहीं की थी। धर्मेन्द्र को मिला वह जीवनदान अल्प साबित हुआ और सोमवार को इस 'वीरू' ने अपने चाहने वालों को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया।

उनका असली नाम धर्मेन्द्र केवल कृष्ण दियोल था। लेकिन फिल्मों में धर्मेन्द्र या धर्मेंदर के रूप में मशहूर हुए। साठ से लेकर नब्बे के दशक फिल्मी दुनिया में धर्मेन्द्र की मौजूदगी हैंडसम हीरो से लेकर प्राजी तक के किरदारों में रही। कभी वो अन्याय के खिलाफ लड़ते दिखे तो कभी हीरोइन को पटाते दिखे। धर्मेन्द्र की लोकप्रियता का फायदा राजनीतिक पार्टियों ने भी उठाया। वो एक बार सांसद का चुनाव भी जीते। सत्तर का दशक बॉलीवुड में धर्मेन्द्र के कॅरियर का सबसे चमकदार समय था। वैसे यह कुछ नाइंसाफी ही है कि सत्यकॉम और जैसी फिल्मों में संजीदा अभिनय से लेकर चुपके चुपके तक बेहतरीन कॉमेडी करने वाले धर्मेन्द्र को अभिनय की किताब में कभी सुर्खियां नहीं मिल सकीं। मुमकिन है कि उनका शरीर सौंदर्य और मोहक मुस्कान उनकी एक्टिंग पर सदा हावी रही हो। करीब पांच दशकों तक फिल्मों में काम करने के बाद भी जाने माने फिल्म अभिनेता धर्मेन्द्र के नाम बॉलीवुड का वैसा कोई युग भले न लिखा गया हो, जैसा कि के.एल. सहगल, दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन या शाहरूख खान आदि के नाम रहा है, लेकिन युग का नामकरण किसी के नाम पर भी क्यों न रहा हो, लेकिन तीन दशकों तक एक समांतर, प्रभावी और लोकप्रिय मौजूदगी धर्मेंद्र की हमेशा रही है। धर्मेन्द्र को महान अभिनेताओं में भले न गिना गया हो, लेकिन वो हरफनमौला एक्टर थे। कुछ किरदार जैसे कि 'अनुपमा' का अशोक, बंदिनी का डॉक्टर, सत्यकॉम का नौजवान सत्यप्रिय और शोले का वीरू, ये चंद नाम हैं, जिनके लिए धर्मेंद्र को हमेशा याद रखा जाएगा। अभिनेता और अभिनय के इन स्थापित मानकों से हटकर धर्मेन्द्र की जो बात सबसे अलग साबित करती है, वो उनका हिंदी फिल्मों का सबसे 'हैंडसम हीरो' होना और एक आर्य पुरूष की तरह 'ही मैन' दिखना। करीब चार दशकों तक महिलाएं धर्मेंद्र इस 'खूबसूरत मर्दानगी' की दीवानी थीं। लेकिन धर्मेन्द्र को मिली यह नैसर्गिक विरासत उनके दूसरे गुणों को कई बार हाशिए पर सरका देती है। धर्मेन्द्र को इस बात का मलाल हमेशा रहा कि 'हैंडसम हीरो' होने के बावजूद उन्हें कभी युगांतरकारी अभिनेता नहीं माना गया। अच्छा काम करने के बाद भी उन्हे एक्टिंग के अवॉर्ड नहीं मिले। हालांकि भारत सरकार ने उन्हें अभिनय के क्षेत्र में योगदान के लिए पद्म भूषण से नवाजा था। बावजूद इसके 'ही मैन' धर्मेन्द्र को एक जिंदादिल और जिंदगी के अंतिम क्षण तक उसे एंज्वॉय करने की तमन्ना रखने वाले हीरो के रूप में याद किया जाएगा।

स्मृति शेष

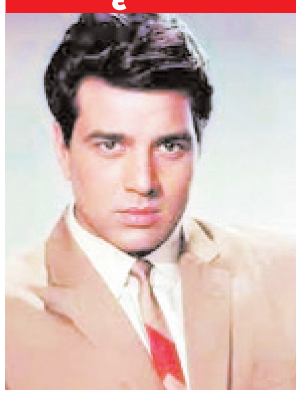

बॉलीवुड के नौ दशकों के इतिहास में करीब आठ दशकों तक कोई न कोई अभिनेता अपने युग प्रतिनिधि चेहरा बनकर उभरता रहा है और एक अर्से तक सूरज की तरह दमकने के बाद वह अपने वजूद को बचाने में लग जाता रहा है। फिर कोई नया चेहरा उसकी जगह ले लेता है। हालांकि बीते एक दशक में बॉलीवुड में अपने युग का बहुमान्य प्रतिनिधि चेहरा कौन है, तय करना मुश्किल है। लेकिन एक दशक पहले तक इसकी पहचान करना आसान था। क्योंकि हर नया हीरो अपने वक्त की सोच, जज्बे और संघर्ष को अभिव्यक्त करने का माध्यम होता है।

इस मायने में धर्मेन्द्र का, जो पंजाब के एक मध्यामर्गीय परिवार से आए थे, बॉलीवुड में देश में नेहरू युग के अंतिम वर्षों में उदय उस पीढ़ी के सपनों का प्रस्फुटन था, जो आजादी के समय बहुत छोटी थी और नए भारत में उसके कुछ रोमांटिक सपने थे। वह बेहतर अवसरों और सुखी जिंदगी की तलाश में संघर्षरत थी। उन सपनों में धर्मेन्द्र जैसा सुंदर और मजबूत शरीर वाला हैंडसम, जिंदादिल और नेकी के रास्ते आगे बढ़ने वाला हीरो शामिल था। आजादी के बाद पारंपरिक बेड़ियों को तोड़कर आगे बढ़ने वाली लड़कियों के लिए तो धर्मेन्द्र 'सपनों के राजकुमार' जैसा ही था। यही कारण है कि बेहद संवेदनशील और मार्मिक अभिनय करने वाली अभिनेत्री मीनाकुमारी से लेकर 'ड्रीमगर्ल' हेमामालिनी तक धर्मेन्द्र के मर्दाने और हसीन अंदाज पर फिदा थीं। उस जमाने में बहुत से लोग तो टॉकीज में सिर्फ धर्मेन्द्र को देखने के लिए जाते थे। यह वो दौर था, जब धर्मेन्द्र की तुलना पर्सनालिटी के लिहाज से हालीवुड अभिनेता जेम्स डीन और पॉल न्यूमैन से की जाती थी, हालांकि खुद धर्मेन्द्र उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे।

कई हिट फिल्में, अलग-अलग किरदार, हीरो से लेकर कैरेक्टर रोल तक धर्मेन्द्र की अदाकारी ने कई रंग बिखेरे, लेकिन उनका देसीपन सदा कायम रहा। गांव का एक पंजाबी जट्ट उनके भीतर हमेशा जिंदा रहा। उम्र के आखिरी दौर में वो सोशल मीडिया पर भी सक्रिय रहे और अपने फैन्स के साथ अपनी पुरानी तस्वीरें और विचार साझा करते रहे।

इस सदी में देवानंद, दिलीप कुमार, मनोज कुमार के बाद धर्मेन्द्र के रूप में बीती सदी के एक और अभिनय सितारे का अवसान है। ये वो नाम हैं, जिन्होंने रजत पट के साथ साथ लोगों के दिलों पर भी लंबे समय तक राज किया। अब तकनीक और सोशल मीडिया के दौर में उस वक्त फिल्मों और फिल्मी हीरो को लेकर लोगों में छायी रहने वाली दीवानगी का नई पीढ़ी का शायद अंदाजा भी नहीं होगा। वक्त चाहे कितना ही बदल जाए, लेकिन धर्मेन्द्र को फिल्मों के साथ-साथ जिंदगी की रील में भी एक ठेठ देसी, जिंदादिल अभिनेता और नायाब इंसान के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।

शरद की सुबह

जिस किले में क़ैद थी वह शय
लामबंद थे ख़तरनाक सैनिक
मुझे उनमें से एक को परास्त कर
करना था प्रवेश
ख़तरनाक सैनिकों में कम ख़तरनाक का
चयन
उससे भिड़ना, उसे हराना
और तोड़कर व्यूह घुसना भीतर
कम मुश्किल न था
लेकिन मैं यह कर गया
भीतर का दृश्य बहुत लुभावना था
तख़्त पर बैठा नायक मुस्कुरा रहा था
सुविधा बिछी थी चहुंओर
ऐश्वर्य बिखरा पड़ा था
उसने मेरा इस्तक़बाल किया
और बैठने को स्थान दिया
जिसे परास्त किया था मैंने
उसके स्थान पर
अब एक अधिक ख़तरनाक नियुक्त हुआ
भीतर आराम से बैठा था मैं
जैसे कोई नुमाइश की चीज़ हूँ।

– मोहन सगोरिया

नहीं रहे बॉलीवुड के 'ही-मैन'

● धर्मेंद्र ने 89 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहा ● विले पार्ले श्मशान घाट पर हुआ अंतिम संस्कार, ● फिल्म जगत में शोक ● पीएम मोदी, राष्ट्रपति मुर्मु समेत फिल्मी सितारों ने दुख व्यक्त किया

मुंबई (एजेंसी)। हिंदी सिनेमा के दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र ने 89 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया। वह पिछले काफी समय से बीमार चल रहे थे। सोमवार 24 नवंबर की सुबह उन्होंने जुहू स्थित अपने घर में अंतिम सांस ली। अभिनेता का अंतिम संस्कार विले पार्ले स्थित पवन हंस श्मशान भूमि में किया गया। सलमान खान, शाहरुख खान, अक्षय कुमार और अमिताभ बच्चन समेत कई बॉलीवुड हस्तियों ने श्मशान घाट पहुंच कर अभिनेता को श्रद्धांजलि दी।

धर्मेंद्र का जन्म लुधियाना में 8 दिसंबर 1935 को हुआ था। उनका पूरा नाम धर्मेंद्र केवल कृष्ण देओल था। उन्होंने 1960 में हिन्दी फिल्मों में पदार्पण किया। बलराज साहनी और कुमकुम इस फिल्म में उनके सह-कलाकार थे। उनकी पहली फिल्म थी, 'दिल भी तेरा हम भी तेरे।' अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म में उन्हें 'धर्मेंद्र' के नाम से प्रस्तुत किया गया और यही उनका फिल्मी नाम बन गया। धर्मेंद्र की पहली चर्चित फिल्म बिमल रॉय की बन्दिनी थी जिसमें उनके साथ सुपरस्टार अभिनेत्री नूतन थीं।

बन्दिनी को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ था। हकीकत, फूल और पत्थर, बहारें फिर भी आएँगी, आँखें, मेरा गाँव, मेरा देश, शोले इत्यादि उनकी चर्चित फिल्में थीं।

राहुल गांधी

दिग्गज एक्टर धर्मेंद्र के निधन पर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भी शोक जताया। उन्होंने एक एक्स पोस्ट में लिखा, महान अभिनेता धर्मेंद्र जी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है और भारतीय कला जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। सिनेमा में लगभग सात दशकों के उनके अद्वितीय योगदान को हमेशा सम्मान और मोहब्बत के साथ याद रखा जाएगा।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी एक्टर के निधन पर शोक व्यक्त किया। एक एक्स पोस्ट में उन्होंने लिखा, भारतीय फिल्म जगत ने आज एक बहुमूल्य सितारा खो दिया।

भारतीय सिनेमा के लिए एक बड़ी क्षति हैः राष्ट्रपति

वरिष्ठ अभिनेता और पूर्व सांसद धर्मेंद्र जी का निधन भारतीय सिनेमा के लिए एक बड़ी क्षति है। वे देश के सबसे लोकप्रिय अभिनेताओं में से एक थे और उन्होंने अपने लंबे फिल्मी करियर में कई यादगार किरदार निभाए। भारतीय सिनेमा की दुनिया में उनका योगदान हमेशा याद रखा जाएगा।

वह एक प्रतिष्ठित फिल्म हस्ती थे, एक अद्भुत अभिनेताः पीएम

धर्मेंद्र जी का निधन भारतीय सिनेमा के एक युग के अंत का प्रतीक है। वह एक प्रतिष्ठित फिल्म हस्ती थे, एक अद्भुत अभिनेता, जिन्होंने हर किरदार में गहराई और आकर्षण भरा। विभिन्न भूमिकाओं को निभाने का उनका अंदाज अनगिनत लोगों के दिलों को छू जाता था। धर्मेंद्र जी को उनकी सादगी, विनम्रता और गर्मजोशी के लिए भी उतना ही सराहा जाता था। इस दु:ख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार, मित्रों और असंख्य प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति।

दोस्त 'वीरू' को खोने के गम में नजर आए

बॉलीवुड से एक दुखद खबर सामने आई है। दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र का आज (24 नवंबर) 89 साल की उम्र में निधन हो गया। कुछ दिनों पहले उन्हें सांस लेने में दिक्कत होने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बता दें कि, हीमैन का अंतिम संस्कार विले पार्ले पवन हंस श्मशान घाट में हुआ। अपने को-एक्टर और करीबी दोस्त धर्मेंद्र के निधन के बाद अमिताभ बच्चन बेटे अभिषेक बच्चन के साथ हीमैन के अंतिम संस्कार में पहुंचे। बिग बी की एक तस्वीर सामने आई हैं जिनमें उनके चेहरे पर दोस्त को खोने का गम साफ-साफ दिख रहा है और वह भावुक नजर आए।

अभी न जाओ छोड़कर धर्मेंद जी के निधन से भावुक हुए प्रशंसकों ने नम आंखों के साथ दी श्रद्धांजलि

धर्मेंद जी के निधन के खबर सुनने के बाद से लेकर नई से लेकर पुरानी जनरेशन तक हर कोई भावुक है और अपने हीमैन को याद कर रहा है। इस मौके पर इंटरनेट यूजर्स ने भी अपने हीरो के कुछ यादगार लम्हों को याद करते हुए इंटरनेट पर अपने रिएक्शन दिए है, जो अब वायरल हो रहे हैं। अभी न जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं कुछ सितारे इस कदर फैंस के दिलों में जगह बना लेते हैं कि उनके जाने के दुख से उनके चाहने वाले कभी भी नहीं उबर पाते है। सच कहा जाएं, तो किसी सितारे की उपलब्धि भी यहीं होती है कि उसके जाने के बाद उसे लोग कैसे याद रखते हैं? धर्मेंद्र जी ने जीवन में नाम और शोहरत के साथ-साथ अगर कुछ कमाया है, तो वह करोड़ों सिनेमा लवर्स का प्यार है। जो आज उनके जाने के बाद इंटरनेट पर अपने इमोशन व्यक्त करते हुए बेहद भावुक नजर आ रहे हैं।

भारत की ताकत, गांवों-पंचायतों और जनसामान्य की सामूहिक शक्ति में निहितः मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय व्यवस्था की मूल आत्मा स्थानीय स्वशासन रही है। हमारे यहां शासन गांव से शुरू होकर राष्ट्र की ओर बढ़ने वाला रहा है। इसी का परिणाम है कि भारतीय चिंतन में गांव को स्वराज और आत्मनिर्भरता की प्रथम इकाई माना गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब आत्मनिर्भर भारत और सुशासन का दृष्टिकोण रखा, तब उन्होंने स्पष्ट कहा था कि भारत की ताकत उसके गांवों, पंचायतों और जनसामान्य की सामूहिक शक्ति में निहित है। आत्मनिर्भर पंचायत-समृद्ध मध्यप्रदेश विषय पर आयोजित यह वर्कशॉप, ग्राम स्वराज, स्थानीय आत्मनिर्भरता और विकसित भारत@2047 के लिए उठाया गया निर्णायक कदम है। गर्व का विषय है कि पंचायतों को प्रशासनिक रूप से दक्ष, वित्तीय रूप से सक्षम और सामुदायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की ठोस रणनीति तैयार करने की इस यात्रा का नेतृत्व प्रदेश के पंचायत प्रतिनिधि कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पंचायत संस्थाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। जिला पंचायत और जनपद पंचायतों के उपाध्यक्ष अभी शिक्षा समितियों के अध्यक्ष होते हैं, लेकिन निरीक्षण के दौरान उनके सुझावों को शामिल नहीं किया जाता है। लेकिन अब उनके द्वारा किए विद्यालय के निरीक्षण और सुझावों को लिपिबद्ध किया जाएगा और शासन इन्हें अमल में लेकर कार्य करेगा। राज्य सरकार ने सरपंचों को पंचायत की गतिविधियों के लिए 25 लाख रूपए तक की राशि खर्च करने का अधिकार दिया है। यह तो केवल शुरुआत है, इस दिशा में आगे भी और पहल की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव पंचायतों को आत्मनिर्भर व समृद्ध बनाने के लिए आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटर शेड विकास 2.0 के अंतर्गत वॉटर शेड महोत्सव का शुभारंभ किया।

पंचायतें निवेश और निवास की बेहतर व्यवस्था के लिए बनाएं मास्टर प्लान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जल गंगा संवर्धन अभियान में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी-कर्मचारी और संगठनों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने पंचायतों को पीने के पानी का प्रबंध करने का अधिकार दिया है। पंचायतें विकास का संकल्प लेकर आगे बढ़ें। निवेश और निवास की बेहतर व्यवस्था के लिए मास्टर प्लान बनाएं। इसकी शुरुआत विदिशा जिले से की जा रही है। राज्य सरकार किसानों को सोलर पंप योजना के माध्यम से लाभ पहुंचा रही है। अगर कोई किसान तीन हॉर्स पावर से 5 हॉर्स पावर तक का सोलर पंप लेता है तो उसे 90 प्रतिशत का अनुदान मिलेगा। पंचायतें इस योजना को भी आगे बढ़ाएं। राज्य सरकार किसानों को बिजली के लिए आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में जिला, जनपद और ग्राम पंचायतों को बनाया जा रहा है सशक्त

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रदेश के गठन के बाद से इस कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में विभानसभा सत्र आयोजित होते थे, हमारी इच्छा है कि आप सभी (पंचायत प्रतिनिधि) नई विधानसभा तक पहुंचे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशा है कि आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारी पंचायतें भी आत्मनिर्भर बने। उनके मार्गदर्शन में जिला पंचायत, जनपद पंचायत और ग्राम पंचायतों को सशक्त बनाया जा रहा है। गत वर्ष के समान दूसरे सम्मेलन का आयोजन कर पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार ने आपको आमंत्रित किया है। राज्य सरकार पंचायतों के समग्र विकास के लिए हर कदम पर साथ खड़ी है।

देश के 53वें सीजेआई बने जस्टिस सूर्यकांत

● शपथ के बाद भाई-बहन के पैर छुए, पूर्व सीजेआई गवई से गले मिले; मोदी-शाह से मिलने पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस सूर्यकांत ने सोमवार को देश के 53वें मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में हुए समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। इसके बाद उन्होंने वहां मौजूद बहन और बड़े भाई के पैर छुए। इस कार्यक्रम में उनके परिवार के लोग भी शामिल हुए। शपथ के बाद सीजेआई सूर्यकांत ने पीएम मोदी समेत अन्य लोगों से मुलाकात की। वे पूर्व सीजेआई बीआर गवई से गले मिले। इस समारोह में ब्राजील समेत सात देशों के मुख्य न्यायाधीश और सुप्रीम कोर्ट के जज भी राष्ट्रपति भवन पहुंचे।

सीजेआई सूर्यकांत का कार्यकाल 14 महीने का होगा

वर्तमान सीजेआई बीआर गवई का कार्यकाल रविवार 23 नवंबर को खत्म हो गया। उनके बाद अब जस्टिस सूर्यकांत यह जिम्मेदारी संभालेंगे। जस्टिस सूर्यकांत 9 फरवरी 2027 को रिटायर होंगे और उनका कार्यकाल लगभग 14 महीने का होगा।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के हेड होंगे सीजेआई सूर्यकांत

सीजेआई सूर्यकांत ने बेंच जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस अतुल एस चंदुरकर के साथ कोर्ट रूम नंबर 1 में आधिकारिक कार्यवाही शुरू की। जस्टिस सूर्यकांत अब पांच मेंबर वाले सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के हेड भी होंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 27 °c
न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 25 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

एटीएस-एनएसजी कमांडोज के घेरे में रामनगरी अयोध्या

● पीएम मोदी आज राम मंदिर में धर्मध्वजा फहराएंगे ● अयोध्या के सांसद को न्योता नहीं, बोले- बुलाते तो नंगे पैर दौड़कर जाते

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर पर धर्मध्वजा फहराने की तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। शहर को 1000 क्विंटल फूलों से सजाया जा रहा है। मंदिर पर फहराई जाने वाली धर्मध्वजा जन्मभूमि पहुंच चुकी है। आज यानी मंगलवार को पीएम मोदी मंदिर के 191 फीट ऊंचे शिखर पर पहली बार ध्वजा फहराएंगे। राम जन्मभूमि और आसपास की सिक्योरिटी बढ़ा दी गई है। हेलिकॉप्टर से निगरानी की जा रही है। एटीएस-एनएसजी कमांडो ने मंदिर को घेर रखा है। इसके अलावा एसपीजी, सीआरपीएफ और पीएसी के जवान भी तैनात हैं। 5 लेयर में मंदिर की सुरक्षा है। उधर, अयोध्या के सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि कहने को तो राम सभी के हैं। लेकिन बीजेपी राम मंदिर की ठेकेदार बनी हुई है। मुझे ही कार्यक्रम में नहीं बुलाया गया। अगर बुलाते तो मैं नंगे पैर दौड़कर जाता।

सीएम योगी ने लिया जायजा

सीएम योगी भी सोमवार को समारोह की तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे। संघ प्रमुख मोहन भागवत भी अयोध्या पहुंच चुके थे। समारोह में उन 100 दानदाताओं को आमंत्रित किया गया है, जिन्होंने राम मंदिर के निर्माण में 2 करोड़ से ज्यादा दान दिया था। हालांकि, शंकराचार्यों को नहीं बुलाया गया है।

इंडिया गेट पर हिड़मा के पोस्टर लहराए गए

● लाल सलाम और अमर रहे के नारे लगे, दिल्ली प्रदूषण के खिलाफ था प्रदर्शन, 22 गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में इंडिया गेट पर रविवार देर शाम वायु प्रदूषण के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल लोगों ने देश के मोस्ट वांटेड नक्सली कमांडर माड़वी हिड़मा (44) के पोस्टर लहराए। पोस्टरों में हिड़मा की तुलना आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा से की गई। हिड़मा को जल, जंगल और जमीन का रखवाला बताया गया। प्रदर्शनकारियों ने 'माड़वी हिड़मा अमर रहे' जैसे

नारे लगाए। उन्होंने पोस्टरों पर भी 'माड़वी हिड़मा को लाल सलाम' जैसे नारे लिखे थे। एक प्रदर्शनकारी के पोस्टर पर लिखा था बिरसा मुंडा से लेकर माड़वी हिड़मा तक, हमारे जंगलों और पर्यावरण का संघर्ष जारी रहेगा। प्रदर्शन के दौरान भीड़ की पुलिस से हाथापाई भी हुई। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर मिर्च स्प्रे कर दिया, जिससे तीन-चार पुलिसकर्मी घायल हो गए। दिल्ली पुलिस ने सोमवार को दो थानों में एफआईआर दर्ज की हैं। अब तक 22 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

महाबोधि महोत्सव में शामिल होने आए उपतिस्स नायक थेरो

सांची। आगामी 29 एवं 30 नवंबर को आयोजित होने वाले महाबोधि महोत्सव एवं सांची मेला में शामिल होने श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष एवं लंकाजी टेंपल जापान के मुख्य संघ नायक वानगल उपतिस्स नायक थेरो सांची पहुंचे हैं। सोमवार को उनसे भेंट कर आशीर्वाद लेने बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षु पहुंचे। थेरो ने बताया कि वे पिछले दिनों जापान से श्रीलंका पहुंच गए थे अब वहां से सांची आए हैं। उन्होंने मेले की तैयारियों के संबंध में महाबोधि सोसायटी सांची के इंचार्ज विमल तिस्स थेरो से चर्चा की एवं मार्गदर्शन दिया। स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों से भी उन्होंने मेले के सफल आयोजन के संबंध में बातचीत की है। उल्लेखनीय है कि सांची मेले की आधारशिला 73 साल पहले सन् 1952 में तब रखी गई थी, जब गौतम बौद्ध के दो परम शिष्य सारिपुत्र और महामोगग्लायन के अस्थि कलश श्रीलंका से नवंबर माह के अंतिम रविवार को सांची लाए गए थे तब इन अस्थि कलशों को यहां चैत्यागिरी विहार में दर्शन के लिए रखे जाने के बाद नीचे तलघर में सुरक्षित कर दिया गया। मेले के दौरान अस्थि कलशों को बाहर निकालकर स्तूप की परिक्रमा के बाद दर्शनों के लिए रखा जाता है।

भारतीय नौसेना में स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस माहे शामिल

● समुद्र में दुश्मन पनडुब्बियों को तलाशेगा; जानें क्यों कहा जाता है 'साइलेंट हंटर'

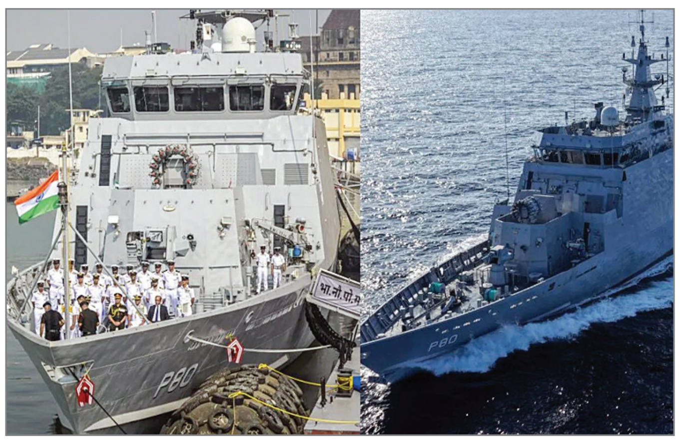

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना में एक स्वदेशी जंगी जहाज आईएनएस माहे शामिल किया गया है। यह माहे क्लास का पहला जहाज है, जिसे कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने बनाया है। जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने इसे आत्मनिर्भर भारत की शक्ति बताया है। यह जहाज दुश्मन की पनडुब्बियों को ढूंढकर नष्ट करने, तटीय गश्त करने और समुद्री मार्गों को सुरक्षित रखने में सक्षम है। इसकी गति लगभग 46 किमी प्रति घंटा है।

आत्मनिर्भर भारत की नई ताकत

भारतीय नौसेना ने सोमवार को आईएनएस माहे को शामिल कर लिया है। यह माहे क्लास का पहला जहाज है जो दुश्मन की नाक में दम करने वाला है। खासतौर पर दुश्मन की पनडुब्बियों को ढूंढकर मार गिराएगा। देखने में छोटा है लेकिन इतना तेज है कि तटीय इलाकों में कोई भी पनडुब्बी इसकी निगाह से बच नहीं सकती। जब आईएनएस माहे को सेना में कमीशन किया गया तो इस मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर जनरल उपेंद्र द्विवेदी मौजूद थे। उन्होंने इस मौके पर कहा कि यह सिर्फ एक जहाज नहीं है बल्कि आत्मनिर्भर भारत की नई ताकत है। कोचीन शिपयार्ड ने लिमिडेट ने इसे भारत में बनाया है। ऐसे कुल 8 जहाज बनाए जा रहे हैं, जिसमें माहे पहला है।

एसआईआर के काम में लगे बीएलओ को ब्रेन हेमरेज

रीवा में परिजन बोले- बुखार था, फिर भी नोडल अधिकारी सर्वे पूरा करने का दबाव बनाते रहे

रीवा (नप्र)। रीवा जिले में सोमवार को एसआईआर प्रक्रिया के दौरान एक बीएलओ को ब्रेन हेमरेज हो गया। उन्हें फौरन रीवा ले जाकर अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुष्पराज नगर में पदस्थ सहायक शिक्षक विजय पांडेय की बीएलओ के तौर पर ड्यूटी लगी थी। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। पूरा मामला सोमवार का है।

परिजन का आरोप है कि वे कई दिनों से एसआईआर सर्वे में लगे हुए थे। इसी दौरान उन्हें हल्का बुखार भी था। तबीयत बिगड़ने के बाद भी नोडल अधिकारी लगातार सर्वे पूरा करने का दबाव बनाते रहे। परिजन का कहना है कि जिम्मेदार अधिकारी न केवल बीमारी को अनदेखा कर रहे थे, बल्कि समय-सीमा के नाम पर मानसिक दबाव भी डाल रहे थे।

सिर में तेज दर्द के बाद अस्पताल ले गए- बीएलओ विजय पांडेय ने बताया कि मेरी तबीयत गुरुवार देर शाम से खराब था। शनिवार और रविवार को तेज बुखार था। सिर में तेज दर्द और बेहोशी की शिकायत पर परिवार के लोग मुझे अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने ब्रेन हेमरेज की पुष्टि की। घटना के बाद परिजन जांच की मांग कर रहे हैं।

परिजन बोले- काम पूरी करने का दबाव था- बीएलओ के परिवार का कहना है कि हल्का फीवर होने की जानकारी अधिकारियों को दी गई थी। फिर भी किसी भी हालत में काम पूरा करने का दबाव बनाया गया। मानसिक तनाव और शारीरिक कमजोरी की वजह से हालत बिगड़ी। यह पूरी तरह से प्रशासनिक लापरवाही का नतीजा है।

बीमारी की जानकारी के बाद राहत क्यों नहीं दी- परिजन ने नोडल अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। वहीं, शिक्षा विभाग और प्रशासन पर भी सवाल उठ रहे हैं कि बीमारी की जानकारी के बाद राहत क्यों नहीं दी गई?

भारत की पहली ट्रांसजेंडर खिलाड़ी, जिसने जीता गोल्ड मेडल

● आइस स्टॉक गेम में 14 राज्यों को हराकर राजस्थान को लाईं अव्वल

टोंक (एजेंसी)। ट्रांसजेंडर को लोग गलत नजरिए से देखते है। समाज आज भी उन्हें इतना महत्व नहीं देता है, लेकिन मैं हिम्मत नहीं हारूंगी। ट्रांसजेंडर होना भले ही मेरे लिए अभिशाप माना जाता रहा हो, लेकिन मैं अपने इस अभिशाप को खेल के दम पर वरदान सिद्ध करके रहूंगी। यह कहना हैं राजस्थान की ट्रांसजेंडर खिलाड़ी रितिका सिंह (21) का। उनका दावा है कि वे देश की पहली ट्रांसजेंडर खिलाड़ी है, जिन्होंने नेशनल लेवल पर हुई आईस स्टॉक गेम चैम्पियनशिप 2025 में गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रचा हैं। टोंक के मालपुरा की रहने वाली ट्रांसजेंडर खिलाड़ी रितिका सिंह ने समर आइस स्टॉक चैंपियनशिप 2025 में राजस्थान टीम की ओर से खेली थी, जिसमें उनके साथ राजस्थान में चार खिलाड़ी और भी शामिल थे। यह 21 नवंबर से 23 नवंबर तक आगरा में हुई थी। फाइनल मुकाबले में गुजरात की टीम को 8 अंक से हराकर जीत हासिल की। इसके बाद सोमवार की दोपहर जयपुर पहुंचने पर सभी का जोरदार स्वागत किया गया।

अब ट्रेन में भी होगा प्री-वेडिंग शूट

बर्थडे सेलिब्रेशन, लगेंगे 5 हजार रुपए प्रति घंटे

नईदिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम ने एक अनोखी पहल की है। अब दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर पर चलने वाली नमो भारत ट्रेनें और उनके स्टेशन आम लोगों के व्यक्तिगत कार्यक्रमों जैसे जन्मदिन पार्टी, प्री-वेडिंग फोटोशूट और छोटे समारोहों के लिए बुक किए जा सकेंगे। इसका मतलब है कि लोग शादी से पहले का फोटोशूट या अन्य व्यक्तिगत आयोजन सीधे ट्रेन में कर पाएंगे।

नए नियम और बुकिंग प्रक्रिया- नई नीति के अनुसार, व्यक्ति, इवेंट आयोजक और फोटोग्राफी या मीडिया कंपनियां चलती या रुकी हुई नमो भारत ट्रेन के कोच बुक कर सकती हैं। इसके अलावा, दुहाई डिपो में एक मॉक-अप कोच भी रखा गया है, जिसे विशेष रूप से शूटिंग के लिए बुक किया जा सकता है। एनसीआरटीसी का कहना है कि यह सेवा लोगों को एक अलग और खास अनुभव देगी।

कीमत और सुविधाएं

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, नमो भारत ट्रेन को व्यक्तिगत आयोजनों या फोटोशूट के लिए 5,000 रुपये प्रति घंटे की दर से बुक किया जा सकता है। इसके अलावा, 30 मिनट सजावट लगाने और 30 मिनट सजावट हटाने के लिए अलग से समय दिया जाएगा। ट्रेनें आधुनिक डिजाइन वाली हैं और फोटोशूट व छोटे कार्यक्रमों के लिए बिल्कुल उपयुक्त मानी जाती हैं। साथ ही, लोग अपनी पसंद की साधारण सजावट भी कर सकते हैं।

पटना में ट्रिपल मर्डर से सनसनी, व्यवसायी की हत्या कर भाग रहे दो अपराधियों को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला

पटना (एजेंसी)। राजधानी पटना में जमीन कारोबारी की हत्या कर भाग रहे अपराधियों की स्थानीय लोगों ने पीट-पीटकर हत्या कर दी। घटना गोपालपुर थाना क्षेत्र के भोगपुर की है। मृतक की पहचान भूपतिपुर निवासी अशरफी सिंह (65) के रूप में की गई है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और जांच में जुट गई। घटना के संबंध में स्थानीय लोगों ने बताया कि बाइक सवार अपराधियों ने भूपतिपुर निवासी अशरफी सिंह (65) की गोली मारकर हत्या कर दी। गोली चलते ही आसपास के लोग घटनास्थल पर जुट गए। लोगों को जुटते देख अपराधी बाइक से भागने लगे, लेकिन ग्रामीणों ने साहस का परिचय देते हुए जमीन कारोबारी की हत्या कर भाग रहे बाइक सवार अपराधियों को खदेड़कर पकड़ लिया। फिर क्या था, लोगों ने दोनों अपराधियों की जमकर पिटाई की और तबतक पीटते रहे, जबतक दोनों अपराधियों की मौत नहीं हो गई। घटना की सूचना मिलते ही सदर डीएसपी घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की जांच में जुट गए। स्थानीय लोगों का कहना है कि मामला 20 करोड़ के जमीनी विवाद का है, जिस वजह से उनकी हत्या हुई है। फिलहाल घर के लोग कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं हैं। घटना के बाद पुलिस मृतक अपराधियों की पहचान में जुट गई है।

बेटियों की शादी के लिए एक लाख तक खर्च करेगी यूपी सरकार

60 हजार सीधे दुल्हन के खाते में और 25 हजार के गिफ्ट

लखनऊ/बस्ती (एजेंसी)। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत सरकार हर वर्ष गरीबों की बेटियों के हाथ पीले कर रही है। इस बार जिले को 575 बेटियों की शादी सामूहिक विवाह कार्यक्रम में कराए जाने का लक्ष्य मिला है। इसके सापेक्ष 1200 से अधिक आवेदन अब तक प्राप्त हो चुके हैं। इनमें से एक हजार आवेदन पात्र पाए गए हैं। ऐसे में योजना के तहत प्रथम आओ प्रथम पाओ की तर्ज पर लाभार्थियों का चयन किया जाएगा।

समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत विवाह करने वाले लाभार्थियों पर अब एक लाख रुपये खर्च होंगे। इसमें से 60 हजार की धनराशि कन्या के खाते में डीबीटी से भेजा जाएगा। इसके साथ ही 25 हजार रुपये कीमत का उपहार दिया जाएगा। वहीं विवाह के आयोजन पर 15 हजार रुपये प्रति जोड़ा खर्च किया जाएगा।
सरकार की ओर से धनराशि दोगुना किए जाने से गरीब अभिभावकों को काफी सहूलियत मिलेगी। योजना की धनराशि बढ़ने से अब आवेदकों की संख्या भी बढ़ने लगी है। पहले जहां लक्ष्य पूरा करने के लिए विभाग को पसीना बहाना पड़ता था, वहीं अब लक्ष्य से दोगुना आवेदन आ रहे हैं। ऐसे में लाभार्थियों का चयन करने के लिए विभाग को पहले आओ, पहले पाओ की रणनीति अपनानी पड़ रही है।

जयमाला के बाद दुल्हन का शादी से इनकार

● वाराणसी में पिता का अपमान देख पुलिस बुलाई; बोली- लालची से शादी नहीं करूंगी

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी के एक शादी का लॉन काफी खूबसूरती से सजा था। मेहमानों की भीड़ लगी थी। बाराती-घराती खाना खा रहे थे। दूल्हा भी द्वारचार के बाद जयमाला लेकर स्टेज पर पहुंच गया था। सजी-धजी दुल्हन डांस करते हुए स्टेज की तरफ बढ़ी। थोड़ी ही देर में दुल्हन जयमाल के स्टेज पर पहुंच गई। लेकिन, तभी दूल्हा और उसकी मां बिगड़ गई। दोनों दहेज के 25 हजार रुपए तुरंत देने की मांग करने लगे। जब किसी

तरह से बात नहीं बनी, तो दुल्हन के पिता ने एक रिश्तेदार से उधार लेकर रुपए दूल्हे की मां को दिए। तब जाकर दूल्हे ने दुल्हन को जयमाला पहनाया।

जयमाला के बाद दूल्हा-दुल्हन और उनके कुछ खास रिश्तेदार खाना खाने बैठे। तभी दूल्हे की मां ने खाना खा रहे लोगों को लिफाफा (रुपए) देने की डिमांड कर दी। इस पर दुल्हन के पिता ने लिफाफा देने से मना कर दिया। इसको लेकर बात ज्यादा बढ़ गई। इसके बाद दुल्हन ने खुद ही शादी करने से इनकार कर दिया, साथ ही पुलिस को भी फोन कर दिया।

दूल्हा पहुंचा थाने, दुल्हन ने मांगा इंसाफ

सूचना मिलते ही शिवपुर थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। दूल्हे को उसके परिवारवालों के साथ थाने ले गई। दूल्हे के खिलाफ दहेज उत्पीड़न और अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उसे हवालात में डाल दिया गया। दुल्हन ने साफ कहा कि वह ऐसे परिवार में शादी कर अपना जीवन बर्बाद नहीं कर सकती। अब दुल्हन वाले शादी पर हुए पूरे खर्च की भरपाई की मांग कर रहे हैं।

पिता बोले- दूल्हे पक्ष की डिमांड ने मेरे परिवार को तोड़ दिया

पिता राजेंद्र प्रसाद जायसवाल ने कहा- मैंने मेहनत-मजदूरी कर, सब्जी बेचकर बेटी को पढ़ाया-लिखाया। उसकी शादी धूमधाम से करने का सपना देखा था। लेकिन, दूल्हे वालों की डिमांड और दुर्व्यवहार ने मेरे परिवार को तोड़कर रख दिया।

प्रदेश के नियोजित विकास के लिये शहर से जुड़ी ग्राम पंचायतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत : विजयवर्गीय

नगरीय निकायों और पंचायतों के बीच बेहतर समन्वय से ही होगा समग्र विकास

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि प्रदेश के सुनियोजित विकास के लिये शहरी क्षेत्र से जुड़ी ग्राम पंचायतों के विकास पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ग्राम पंचायतों की अवैध कॉलोनियाँ जनता के लिये समस्या बन जाती हैं। इन पर पूरी तरह से रोक लगनी चाहिए। मंत्री श्री विजयवर्गीय सोमवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में पंचायत प्रतिनिधियों एवं राज्य स्तरीय पदाधिकारियों की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्रीमती राधा सिंह भी मौजूद थी।

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 को लेकर विकसित भारत की कल्पना की है। हम उनकी कल्पना को प्रदेश में तभी सकार कर सकेंगे जब हम ग्रामीण और शहरी क्षेत्र का इंटीग्रेटेडप्लान तैयार करेंगे। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि शहरी क्षेत्रों में बढ़ती आबादी शहरों के साथ ही इनके आसपास की ग्राम पंचायतों को भी प्रभावित करती है। उन्होंने बताया कि एक अनुमान के अनुसार प्रदेश में 32 प्रतिशत शहरी आबादी है, जो आने वाले समय में बढ़ कर करीब 50 प्रतिशत तक हो जायेगी। इससे चुनौतियां और बढ़ेंगी। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया की शहरी क्षेत्र से लगी ग्राम पंचायतों के अधिकारियों और नगरीय निकायों के अधिकारियों के बीच नियोजित विकास को लेकर समन्वय समिति की बैठक हो। इस बैठक में मास्टर प्लान से जुड़े विशेषज्ञों की भी सलाह ली जाये।

निजी भागीदारी को करें प्रोत्साहित

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि शहरी क्षेत्र से जुड़ी नगरीय निकायों में विकास कार्यों में प्रायवेट-पब्लिक पार्टनरशिप मॉडल को प्रोत्साहित किया जाये। इस प्रक्रिया में हम कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी फंड (सीएसआर फंड) का भी उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने पंचायत पदाधिकारियों को ग्राम पंचायत में स्वच्छ वातावरण के लिये ग्राम और शहर वन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता बताई।

सौर ऊर्जा का हो अधिक उपयोग

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकारें सब्सिडी के साथ सौर ऊर्जा को प्रोत्साहित कर रही है। हमें शत प्रतिशत सौर ग्राम, सौर नगर और सौर जिले कर तरफ बढ़ना होगा। इस प्रयास से हम मध्यप्रदेश को देश में अलग पहचान दे सकते है। बैठक में आश्रय निधि के उपयोग किये जाने पर भी जोर दिया गया। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने पंचायत पदाधिकारियों को केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं के प्रति सजग रहने की बात कही। उन्होंने स्वामित्व योजना के तहत किये जा रहे कार्यों की जानकरी दी। सत्र में शहरी क्षेत्र से लगी ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों, जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारियों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अपने सुझाव रखे। कार्यक्रम में बेहतर मास्टर प्लान के साथ आदर्श गांव के विकास के मॉडल की प्रस्तुति दी गई। सत्र में अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्रीमती दीपाली रस्तोगी ने कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी दी।

अभिनेता स्व. धर्मेंद्र का अभिनय सदैव अविस्मरणीय रहेगा : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय सिनेमा के महान अभिनेता श्री धर्मेन्द्र के निधन पर गहन दुख व्यक्त करते हुए उन्हें मध्यप्रदेश सरकार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिनेमा जगत को समृद्ध करने में उनका योगदान अद्वितीय रहा है। उनका अभिनय सदैव अविस्मरणीय रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत आत्मा की शांति और शोकाकुल परिजन, प्रशंसकों और शुभचिंतकों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. श्री धर्मेन्द्र भारतीय सिनेमा के ऐसे महान कलाकार थे, जिन्होंने अपनी सहज, प्रभावशाली और करिश्माई अभिनय शैली से दर्शकों के दिलों पर राज किया। स्व. श्री धर्मेंद्र भारतीय सिनेमा जगत के हर दौर में लोकप्रिय, अनूठे और सुपरहिट अभिनेताओं में शामिल हैं। शोले जैसी कालजयी फिल्म सहित कई फिल्मों में उनकी भूमिकाओं को सदैव याद रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि स्व. श्री धर्मेन्द्र का योगदान सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं था, उनका विनम्र स्वभाव, सरल हृदय, देशभक्ति और सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता उन्हें एक महान और अनुपम व्यक्तित्व का स्वामी बनाती थीं।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के लिए 8 आईएएस नोडल अधिकारी नियुक्त

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के अंतर्गत प्रदेश के चयनित जिलों के लिए राज्य शासन द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को जिला नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिला नोडल अधिकारी, भारत सरकार द्वारा निर्धारित टैम्पलेट्स अनुसार योजना के क्रियान्वयन के लिए अपने मार्गदर्शन में आवंटित जिलों की जिला कार्य योजना तैयार कराकर विकसित पोर्टल पर अपलोड करायेंगे एवं जिले में योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए नियमित रूप से निगरानी एवं सघन अनुश्रवण करेंगे।

सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश अनुसार किसान कल्याण तथा कृषि विकास संचालक श्री अजय गुप्ता को उमरिया, वि.क.अ., सह आयुक्त सह पंजीयक, सहकारी समिति श्री मनोज पुष्प को डिंडौरी, प्रबंध संचालक, मत्स्य महासंघ सुश्री निधि निवेदिता को अलीराजपुर, प्रबंध संचालक, कृषि विपणन बोर्ड सह आयुक्त मंडी श्री कुमार पुरूषोत्तम को शहडोल, उप सचिव, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग श्री संतोष कुमार वर्मा को सीधी, सदस्य सचिव नीति आयोग श्री ऋषि गर्ग को निवाड़ी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, रोजगार गांरटी परिषद श्री अवि प्रसाद को टीकमगढ़ और उप सचिव, नर्मदा घाटी विकास श्री राहुल धोटे को अनूपपुर का जिला नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जबलपुर में रिटायर्ड पुलिसकर्मी को सरेराह पीटा

छेड़खानी से रोकने पर 2 दिन बाद किया हमला ; बचाने आई पत्नी और बेटी से भी मारपीट

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में रिटायर्ड पुलिसकर्मी गुलाबचंद गौड़ और उनके परिवार पर सरेराह हमला हुआ। पत्नी और बेटी ने उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन बदमाशों ने उनके साथ भी मारपीट की। यह घटना 22 तारीख की रात की है और पूरी वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई। पीड़ित परिवार ने आरोपियों की गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई की मांग को लेकर आधारताल थाना पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई।

छेड़खानी रोकने पर किया हमला

दो दिन पहले कंचनपुर मोहल्ले में सुनील बर्मन और उसके साथियों ने लड़कियों से छेड़छाड़ की थी। गुलाबचंद गौड़ ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तब बदमाश वहां से चले गए। 22 तारीख की रात उन्होंने बदला लेने के लिए गुलाबचंद और उनके परिवार पर हमला किया।

मंदिर जाते समय की मारपीट

गुलाबचंद अपनी पत्नी के साथ मंदिर जा रहे थे, तभी सुनील बर्मन और दो अन्य बदमाश उन्हें घेरकर मारने लगे। बदमाशों ने कहा कि तुम मोहल्ले का लीडर बन रहे हो। गुलाबचंद की पत्नी ने विवाद शांत करने की कोशिश की, लेकिन बदमाशों ने उन पर भी हमला किया। पड़ोस में कोई मदद के लिए नहीं आया। इस बीच उनकी बेटी पिंकी शाह भी आई, और बदमाशों ने उसके साथ भी मारपीट की। पूरा घटना का वीडियो सीसीटीवी में रिकॉर्ड हो गया।

पसली और कमर में गंभीर चोट

गुलाबचंद ने बताया कि बदमाश उस रात रास्ते में गांजा पी रहे थे और छेड़खानी कर रहे थे, उन्हें टोके जाने पर हमला कर दिया। जिससे पसली और कमर में गंभीर चोट आई है।

बेटी पिंकी शाह ने कहा, क्या केवल छेड़खानी के खिलाफ आवाज उठाना गलत है, जिस कारण मेरे पिता, मां और मेरे साथ मारपीट हुई?

आधारताल थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपियों की तलाश शुरू कर दी गई है। सुनील बर्मन और उसके साथियों को जल्द गिरफ्तार कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

पार्वती-कालीसिंध-चंबल के बांधों पर दिग्विजय को ऐतराज

सीएम को पत्र लिखा– छोटे डैम बनाए जाएं, वरना कई गांव डूबेंगे, डीपीआर की अनदेखी पर सवाल

भोपाल (नप्र)। एमपी और राजस्थान की बहुप्रतीक्षित नदी जोड़ो परियोजना पार्वती-कालीसिंध-चंबल रिवर लिंक प्रोजेक्ट में बनाए जाने वाले बांध पर पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने ऐतराज जताया है। दिग्विजय सिंह ने सीएम डॉ मोहन यादव को पत्र लिखा है। दिग्विजय ने सीएम को भेजे पत्र में लिखा कि बड़ा बांध बनाने से कई आबाद गांव और उनके किसानों की हजारों एकड़ जमीन डूब जाएगी।

बड़े नहीं छोटे बांध बनाए जाएं- दिग्विजय सिंह ने पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना के अंतर्गत चांचौड़ा, कुंभराज क्षेत्र में घाटाखेड़ी के पास प्रस्तावित बड़े बांध को लेकर गंभीर तकनीकी, पर्यावरणीय और मानवीय सवाल उठाए हैं।

दिग्विजय सिंह ने बताया कि मध्यप्रदेश और राजस्थान सरकार के बीच दिसंबर 2024 में हुए जल बंटवारे के समझौते के बाद दो बांध कुंभराज (आई) और कुंभराज (आईआई) का निर्माण प्रस्तावित है।

लेकिन, विभागीय गतिविधियों से संकेत मिल रहा है कि इन दो बांधों की जगह एक ही बड़ा बांध गुना जिले के घाटाखेड़ी के पास बनाया जा सकता है। यदि ऐसा होता है तो लगभग 10 हजार हेक्टेयर उच्च गुणवत्ता वाली सिंचित कृषि भूमि, कई समृद्ध और आबाद गांव, बस्तियां डूब क्षेत्र में आ जाएंगे।

किसानों की उपजाऊ जमीनें डुबोना उन्हें आत्महत्या की तरफ धकेलना

दिग्विजय ने कहा कि कृषि भूमि पहले ही औद्योगीकरण, शहरीकरण और आधुनिक विकास के कारण लगातार घट रही है। ऐसे में हजारों किसानों की उपजाऊ भूमि डुबोना उन्हें आत्महत्या की ओर धकेलने जैसा होगा।

डीपीआर और पर्यावरण मंजूरी की अनदेखी पर ऐतराज जताया

दिग्विजय सिंह ने डीपीआर और पर्यावरण स्वीकृति को नजरअंदाज करने पर गंभीर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में जल संसाधन विभाग द्वारा केन्द्रीय जल आयोग ,पर्यावरण मंत्रालय से डीपीआर व पर्यावरण स्वीकृति लिए बिना परियोजनाएं शुरू करने की 'अनुचित परंपरा' बन गई है। यह नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है। इसलिए उन्होंने आग्रह किया कि प्रारंभिक प्रतिवेदन ,विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन एवं पर्यावरण स्वीकृति प्राप्त किए बिना परियोजना का क्रियान्वयन शुरू न किया जाए।

मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने दिए सुझाव

जलग्रहण क्षेत्र में छोटी नदियों/नालों पर छोटे वॉटर-रिटेनिंग स्ट्रक्चर, पिक-अप वियर्स का निर्माण किया जाए जिससे भूजल रिचार्ज बढ़े व एक्यूफर का रिसाव मुख्य नदी प्रवाह को बढ़ाए। और बिना किसी गांव को डुबोए लगभग 7000 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र सिंचित हो सके। बड़े बांध के स्थान पर पिक-अप वियर्स का निर्माण किया जाए। उन्होंने बताया कि परियोजना में सिंचाई नहरों के बजाय लिफ्ट इरिगेशन (प्रेशराइज्ड पाइप) का उपयोग तय है। इस स्थिति में बड़े बांध का औचित्य संदिग्ध है। पिक-अप वियर्स से डूब क्षेत्र अत्यंत कम रहेगा, कृषि भूमि सुरक्षित रहेगी एवं सिंचाई क्षमता बराबर बनी रहेगी। पार्वती नदी में मिलने वाली सहायक नदियों पर भी संरचनाएं बनाई जाएं। ताकि, विकेंद्रीकृत जल संरचनाओं के माध्यम से अधिकतम क्षेत्र को लाभ मिल सके।

बदमाश ने घर के बाहर खड़ी कारों को फूंका

भोपाल में हुई वारदात सीसीटीवी में कैद, संदिग्ध युवक अंधेरे का फायदा उठाकर फरार

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में अपराधियों के हौसले लगातार बुलंद होते नजर आ रहे हैं। ताज़ा मामला बैरागढ़ कला स्थित महाकाल कॉलोनी का है, जहां देर रात एक बदमाश ने घर के बाहर खड़ी दो कारों में आग लगा दी। पूरी घटना पास लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है।

फुटेज में एक युवक संदिग्ध अवस्था में कॉलोनी में प्रवेश करता दिखाई देता है। उसके हाथ में ज्वलनशील पदार्थ से भरा कोई डिब्बा भी नजर आ रहा है। कुछ ही देर बाद उसने वहां खड़ी दो गाड़ियों में आग लगा दी और अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। सुनील विश्वकर्मा के घर के बाहर खड़ी बलेनो कार में आग लगने के बाद स्थानीय लोगों ने तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची खजूरी थाना पुलिस ने आग पर काबू पाने के बाद घटनास्थल का निरीक्षण किया और सीसीटीवी फुटेज अपने कब्जे में ले लिया।

पुलिस संदिग्ध की पहचान और उसकी गिरफ्तारी के लिए जांच में जुटी है। लगातार बढ़ रही ऐसी घटनाओं से स्थानीय लोगों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ती जा रही है।

रातीबड़ थाना अंतर्गत सूरज नगर के पास रूई से भरा हुआ ट्रक पलटा।

प्रदेश में हवा दम घोंटू, ज्यादातर जगह एक्यू 300 पार

98 प्रतिशत शहरों में बढ़े धूल के कण ; सिंगरौली के बाद भोपाल बना दूसरा सबसे प्रदूषित शहर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में हवा की गुणवत्ता लगातार बिगड़ती जा रही है। प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की वेबसाइट पर उपलब्ध लाइव मॉनिटरिंग सिस्टम के ताजा आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश के 98 प्रतिशत शहरों में पीएम 2.5, यानी धूल के बारीक कणों का स्तर बढ़ा हुआ है। दिल्ली की तरह अब मध्य प्रदेश के भी कई शहर गंभीर प्रदूषण की चपेट में आ गए हैं।

सबसे खराब स्थिति सिंगरौली की रही, जहां ट्रॉमा सेंटर पर एक्यू 356 दर्ज किया गया, जो प्रदेश में सबसे अधिक है। वहीं भोपाल प्रदेश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर बन गया है। यहां तीन प्रमुख स्थानों-पर्यावरण परिसर में 303, कलेक्टोरेट में 321 और टीटी नगर में 347 एक्यूआई रिकॉर्ड किया गया। तीनों स्थान वेरी पुअर श्रेणी में शामिल हैं। इन तीनों की तुलना में टीटी नगर की स्थिति सबसे ज्यादा खराब पाई गई है।

ग्वालियर में भी स्थिति चिंताजनक

ग्वालियर में भी स्थिति चिंताजनक है। महाराज वाड़ा में 308, डीडी नगर में 309 और सिटी सेंटर में 243 एक्यूआई मिला। इनमें से महाराज वाड़ा और डीडी नगर की हवा बेहद खराब श्रेणी में रही, जबकि सिटी सेंटर कुछ कम प्रदूषित, लेकिन पुअर कैटेगरी में रहा। इंदौर में अलग-अलग स्थानों पर अलग स्थिति देखने को मिली। छोटी ग्वालटोली में 304 एक्यूआई वेरी पुअर रहा, जबकि एयरपोर्ट पर 155, रेसीडेंसी एरिया में 103 और खंडवा रोड के आसपास 155 के आसपास एक्यूआई मॉडरेट मिला।

कोहरा और सर्दी में इसलिए बढ़ता है प्रदूषण

पर्यावरण के जानकारों का कहना है कि ठंड के सीजन में आम तौर पर एक्यूआई बढ़ता ही है। ठंड में वाहनों से निकलने वाली हानिकारक गैस एक्सपेंड नहीं हो पातीं व वायुमंडल में ठहरी रहती हैं। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती है, गैस व धूल के कण वायुमंडल में देर तक ठहरते हैं। इससे एक्यूआई बढ़ता है। इसी के साथ अधिक कोहरे की वजह से भी कई बार वायुमंडल में मौजूद हानिकारक गैस डिजॉल्व नहीं हो पाती हैं।

प्रदेश के 5 सबसे प्रदूषित शहर

सिंगरौली (ट्रॉमा सेंटर)	356
भोपाल	347
पीथमपुर इंडस्ट्रियल एरिया	335
मंडीदीप	321
सागर कलेक्टोरेट	311

पर्यावरण विशेषज्ञ सुभाष सी. पांडे के अनुसार

सर्दियों में देर रात और सुबह हवा का दबाव कम होने से प्रदूषक नीचे जम जाते हैं।

इससे सुबह की हवा सबसे ज्यादा प्रदूषित होती है।

यह स्थिति फेफड़ों के रोगियों, हार्ट पेशंट, 5 साल से छोटे बच्चों और 60+ उम्र के लोगों के लिए बेहद खतरनाक है।

उन्होंने सलाह दी कि मॉर्निंग वॉक हलकी धूप निकलने के बाद ही करें, क्योंकि उस समय हवा में प्रदूषक ऊपर उठने लगते हैं।

जहां हवा साफ मिली, उसका कारण

विशेषज्ञों का कहना है कि दमोह, खरगोन, रीजनल पार्क जैसे इलाकों में एक्यूआई Good या Satisfactory इसलिए मिला, क्योंकि इन स्थानों पर उद्योग और ट्रैफिक कम है। हवा तेज चलने से प्रदूषक जल्दी फैल जाते हैं। तेज हवा प्रदूषकों को जमीन से ऊपर ले जाती है, इसलिए ऐसी जगहों की हवा अपेक्षाकृत जल्दी साफ हो जाती है।

भोपाल में युवक को लाठी-डंडों से पीटा

बेसुध होने तक मारते रहे बदमाश, भीड़ को देखा तो भागे ; पुलिस ने आरोपियों का निकाला जुलूस

भोपाल(नप्र)। भोपाल में 3 बदमाशों ने एक युवक पर सरेराह जानलेवा हमला किया। वे बेसुध होने तक युवक पर लाठी-डंडे बरसाते रहे। युवक सड़क पर पड़ा चीखता-चिल्लाता रहा।

वारदात हबीबगंज थाना इलाके में पॉश इलाके चार इमली में रविवार देर रात की है। इसका वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने 3 आरोपियों के अलावा 3 और बदमाशों को गिरफ्तार किया है।

हबीबगंज थाना प्रभारी संजीव चौकसे ने बताया कि ऋषि नगर निवासी रिंकू सिंह ड्राइवर है। रविवार दोपहर में उसका विवाद पांच नंबर इलाके में रहने वाले अजय, लखन और उनके साथियों से हो गया था, तब मौके पर मौजूद लोगों ने समझाइश देकर मामला शांत कराया था।

इसी रंजिश को लेकर रात में चार इमली के दुर्गा पेट्रोल पंप के सामने रिंकू सिंह को अजय, लखन और एक अन्य ने रोक लिया। उसे धक्का देकर सड़क पर गिरा दिया।

लाठी-डंडों से बेरहमी से पीटने लगे। बदमाश रिंकू को इतनी बेरहमी से पीट रहे थे कि आसपास से गुजरने वाले लोग डर के कारण पास तक नहीं पहुंचे।

कुछ समय बाद राहगीरों ने हिम्मत दिखाई और बीच-बचाव करने उनके नजदीक पहुंचे। लोगों का जमावड़ा देख हमलावर मौके से भाग निकले।

पुलिस ने आरोपियों का निकाला जुलूस- मामले में हबीबगंज पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने जहां वारदात की थी। सोमवार को पुलिस ने 5 नंबर स्टाफ से आरोपियों का जुलूस निकाला। पुलिस के अनुसार पुरानी रंजिश को लेकर केस वापस नहीं लेने पर उन्होंने युवक की पिटाई की थी।

संपादकीय

नए श्रम कानूनों का विरोध क्यों?

केन्द्र सरकार द्वारा हाल में लागू नए श्रम कानूनों का श्रमिक संगठन और विपक्षी राजनीतिक पार्टियां विरोध कर रही हैं। सरकार का दावा है कि नए कानूनों से उन श्रमिकों और कमचारियों को भी लाभ मिलेगा, जो संक्षिप्त अवधि के लिए कांट्रेक्ट पर काम कर रहे हैं या फिर गीगा वर्कर हैं। जबकि श्रमिक संगठनों का कहना है कि सरकार ने पुराने कानूनों में बदलाव कर उसे पूरी तरह मालिकों और पूंजीपतियों के पक्ष में कर दिया है। नए कानून में श्रमिक की रोजगार सुरक्षा का न तो कोई प्रावधान है और न ही गारंटी। सुधार के नाम पर किए गए इस बदलाव से कंपनियों को कर्मचारियो की मनमानी छंटनी का आधार मिल गया है। श्रमिकों की हड़ताल पर रोक लगा दी गई है। इससे श्रमिकों का शोषण बढ़ेगा। बहरहाल भारत सरकार का दावा है कि है कि नए श्रम कानून 2025 पुराने और खंडित श्रम कानूनों का आधुनिकीकरण करेंगे, जिससे लाखों श्रमिकों को सशक्त सुरक्षा मिलेगी। हालांकि इन्हें विपक्षी दलों और ट्रेड यूनियनों के भारी विरोध के बावजूद लागू किया गया है। सरकार ने हड़ताल पर भी पूरी तरह रोक लगा दी है। नए कानून के तहत कंपनियों को कर्मचारियों को ग्रेच्युटी अब 1 साल के बाद ही देना होगी, जो अभी तक पांच साल के बाद ही ग्रेच्युटी मिलती थी। इन चार संहिताओं ने वेतन, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा और व्यावसायिक सुरक्षा से संबंधित 29 पुराने कानूनों की जगह ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बदलाव को 'सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम और समय पर मजदूरी भुगतान, सुरक्षित कार्यस्थल और लाभकारी अवसरों' के लिए एक मजबूत आधार बताया है। नए कानून के तहत कारखानों में छंटनी के लिए सरकारी मंजूरी की आवश्यकता की सीमा को 100 श्रमिकों से बढ़ाकर 300 श्रमिकों तक कर दिया गया है, जिससे व्यवसायों के परिचालन में अधिक लचीलापन मिलेगा। कंपनियों को काम के घंटों को बढ़ाने की अधिक छूट मिलेगी। अभी तक अधिकतम 9 घंटे का नियम है। हालांकि हर कंपनी इसे अपने नियमों के मुताबिक लागू करेगी। इसके अलावा अब महिलाओं को कानूनी रूप से रात की पाली (नाइट शिफ्ट) में काम करने की अनुमति होगी। पहली बार, इन संहिताओं में गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कानूनी पहचान दी गई है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया गया है। अनुमान है कि 2030 तक यह क्षेत्र 23.5 मिलियन से अधिक श्रमिकों तक पहुँच जाएगा। इन सुधारों का ट्रेड यूनियनें यह कहकर विरोध कर रही हैं कि इन्हें श्रमिकों की सहमति के बगैर लागू किया गया है। ये कानून श्रमिकों के अधिकारों को 'छीन' लेंगे। जबकि अर्थशास्त्रियों का मानना है कि इन बदलावों से छोटी, असंगठित फर्मों पर दबाव पड़ सकता है। लेकिन लंबी अवधि में न्यूनतम मजदूरी और बढ़ी हुई सामाजिक सुरक्षा के कारण ये कार्य परिस्थितियों और घरेलू उपभोग दोनों के लिए पॉजिटिव हो सकते हैं। नए कानून में श्रमिकों को एक साल की नौकरी के बाद ही ग्रेच्युटी पाने का अधिकार होगा। वेतन की भी नई परिभाषा की गई है। इसके अंतर्गत पीएफ और ग्रेच्युटी की गणना के लिए, कुल पारिश्रमिक का न्यूनतम 50 प्रतिशत हिस्सा मूल वेतन (बेसिक पे), महंगाई भत्ता (डीए) आदि होना अनिवार्य है, जिससे कर्मचारियों का बचत आधार बढ़ेगा। अहम बात यह कि श्रमिकों को समय पर वेतन का भुगतान करना अनिवार्य होगा। ओवरटाइम कराने पर दोगुना वेतन देय होगा। लेकिन सप्ताह में काम की कुल अवधि 48 घंटे ही रहेगी। इससे 50 करोड़ कामगारों को लाभ होगा। वैसे ट्रेड यूनियनों के विरोध का सरकार पर कोई असर शायद ही हो, क्योंकि आर्थिक सुधारों के बाद बीते तीन दशक में यह आंदोलन बहुत कमजोर पड़ चुका है। नए कानूनों का व्यावहारिक असर कुछ समय बाद दिखेगा।

नजरिया

अरुण कुमार त्रिपाठी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बिहार चुनाव से उपजे सवाल और नफा नुकसान

निराला की कविता में जो निराशा छलकती है उसमें हम इस युग की निराशा के अंश देख सकते हैं। निश्चित तौर पर इस पराजय के बाद हमने 'इंडिया समूह' के नेताओं को रोते हुए नहीं देखा, लेकिन वे उसी प्रकार रो रहे होंगे जैसे रावण से पराजित होकर रण से लौटे राम के नेत्रों से आंसू गिर रहे थे। निराला की कविता में आज की लोकतांत्रिक और अधिनायकवादी शक्तियों के संघर्ष को हम देख सकते हैं। पराजय का सिलसिला और उससे उपजी निराशा इतनी गहरी है कि वे तमाम लोग भी इस विजय को वैधानिक और नैतिक मान रहे हैं जो न सिर्फ दिन-रात लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की बात करते हैं, बल्कि उसके लिए सड़क से न्यायालय तक सक्रिय भी रहते हैं। ऐसे व्याख्याकारों की लंबी कतार है जो साफ कह रहे हैं कि महिलाओं, अति पिछड़ों और सवर्ण मतों का बड़ा हिस्सा राजग के पक्ष में एकजुट था। नीतीश कुमार के सामाजिक न्याय के कंधे पर हिंदुत्व ने सवारी कर रखी थी इसलिए इसे जीतना ही था।

बिहार चुनाव पर देश क्या, पूरी दुनिया की निगाहें टिकी थीं। जिनकी भी लोकतंत्र में आस्था है उन्हें यह आशा थी कि बिहार भारत में लोकतंत्र के हरण के धारावाहिक सिलसिले को पलट देगा और फिर शुरू होगा पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल से होते हुए उत्तरप्रदेश तक में अन्याय, झूठ और अत्याचार को उखाड़ फेंकने का चक्र, जो आखिर में केंद्रीय सत्ता के परिवर्तन तक जाएगा। लेकिन बिहार में 'महागठबंधन' की भारी पराजय और 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' की प्रचंड विजय के उपरांत पैदा हुई लोकतांत्रिक शक्तियों की निराशा देखकर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्ति पूजा' का स्मरण हो गया।

वही कविता जो 1936 में तब लिखी गई थी, जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आशा और निराशा के ऊब-चूब से गुजर रहा था। महात्मा गांधी को समझ नहीं आ रहा था कि अंग्रेजों से किस प्रकार लड़ा जाए कि जल्दी आजादी मिल जाए। अंग्रेज निरंतर भारत को विभाजित कर रहे थे और गांधी के समक्ष एक ओर मोहम्मद अली जिन्ना की चुनौती थी तो दूसरी ओर सावरकर और तीसरी ओर भीमराव आंबेडकर की।

निराला की कविता में जो निराशा छलकती है उसमें हम इस युग की निराशा के अंश देख सकते हैं। निश्चित तौर पर इस पराजय के बाद हमने 'इंडिया समूह' के नेताओं को रोते हुए नहीं देखा, लेकिन वे उसी प्रकार रो रहे होंगे जैसे रावण से पराजित होकर रण से लौटे राम के नेत्रों से आंसू गिर रहे थे। निराला की कविता में आज की लोकतांत्रिक और अधिनायकवादी शक्तियों के संघर्ष को हम देख सकते हैं।

पराजय का सिलसिला और उससे उपजी निराशा इतनी गहरी है कि वे तमाम लोग भी इस विजय को वैधानिक और नैतिक मान रहे हैं जो न सिर्फ दिन-रात लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की बात करते हैं, बल्कि उसके लिए सड़क से न्यायालय तक सक्रिय भी रहते हैं। ऐसे व्याख्याकारों की लंबी कतार है जो साफ कह रहे हैं कि महिलाओं, अति पिछड़ों और सवर्ण मतों का बड़ा हिस्सा राजग के पक्ष में एकजुट था। नीतीश कुमार के सामाजिक न्याय के कंधे पर हिंदुत्व ने सवारी कर रखी थी इसलिए इसे जीतना ही था।

राहुल गांधी विदेश चले गए, 'एसआईआर' पर शुरू में यात्रा की, लेकिन बाद में उसे मुद्दा नहीं बना पाए, उतनी मेहनत नहीं कर पाए जितनी 'एनडीए' के नेताओं ने की, टिकट ठीक से नहीं बांटा, तेजस्वी को मुख्यमंत्री पहले नहीं घोषित किया, जंगल राज का खौफ वगैरह-वगैरह। मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना ने चमत्कार किया और बड़ी संख्या में महिलाओं ने पुरुषों से अलग होकर वोट दिया।

जब ऐसी योजनाएं महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में काम कर सकती हैं तो बिहार में क्यों नहीं। फिर ऐसी योजनाओं का हथकंडा तृणमूल कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा अपनाता है तो जनता दल (एकी) के अपनाने में क्या दिक्कत है। नीतीश कुमार को जनता ने शानदार विदाई दी और आपरेशन सिंदूर से लेकर दूसरे मोर्चों तक प्रकट भाजपा और संघ के राष्ट्रवाद की काट न तो जाति जनगणना से की जा सकती है और न ही नौकरियां देने के खोखले वादे से।

इन तमाम तर्कों ने पूर्व निर्धारित इस प्रचंड जीत को सही साबित करना और विपक्ष और उसके नेताओं को नाकारा बताना शुरू कर दिया है। इस प्रक्रिया में उस हिंसक और निम्नस्तरीय भाषा की अनदेखी की जा रही है जिसका प्रयोग चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और उनके केंद्रीय मंत्रियों ने किया। इस बात की भी अनदेखी की जा रही है कि बीच चुनाव में महिला रोजगार योजना की राशि खाते में दिया जाना 'आदर्श आचार संहिता' का स्पष्ट उल्लंघन है।

इस बात की भी उपेक्षा हो रही है कि इस दौरान अपराधियों ने किस प्रकार चुनाव को न सिर्फ प्रभावित किया, बल्कि चुनाव में विजय भी हासिल की। इस बात पर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि महिलाओं के खाते में दस हजार की राशि स्थानांतरित करने के अलावा धनबल और सरकारी बल का अनौपचारिक रूप से कितना प्रचंड प्रयोग हुआ।

इस बीच 'एसआईआर' के मुद्दे के प्रभावहीन होने का भी सारा दोष विपक्ष पर ही मढ़ा जा रहा है। न तो उस प्रक्रिया में काटे गए और जोड़े गए नामों पर चर्चा हो रही है और न ही इस बात पर चर्चा हो रही है कि चुनाव आयोग किस प्रकार निरंतर पारदर्शिता से दूर चुनावों को सत्तारूढ़ दलों के जश्न और विपक्ष के शोक का आयोजन बनाता जा रहा है। असल में बिहार के इन चुनाव परिणामों ने एक बात को प्रमाणित कर दिया है कि भारतीय लोकतंत्र में न सिर्फ संस्थाएं भ्रष्ट और अनैतिक हुई हैं, बल्कि समाज भी अनैतिक और भ्रष्ट हुआ है।

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि नीतीश कुमार ने स्त्रियों के सबलीकरण के बहाने स्त्रियों को भी मरते हुए लोकतंत्र के प्रति संवेदनहीन बना दिया है। अगर महिलाओं को राष्ट्रीय स्तर पर छीने जा रहे संवैधानिक अधिकारों की पीड़ा नहीं दिखती और खाते में आई हुई रकम से वोट को बेंच देने की सौदेबाजी ज्यादा ठीक महसूस होती है तो फिर मान लेना चाहिए कि नीतीश कुमार ने अपनी सत्ता के लिए समाजवाद, सामाजिक न्याय और नारी सशक्तीकरण को पूंजीवाद और हिंदुत्व की चेरी बना दिया है।

बिहार से लोकतंत्र की वापसी की आशा वे लोग लगाए हुए थे जिनके मन-मानस में यह स्मृति है कि बिहार अन्याय के विरुद्ध क्रांति की भूमि है। वे जिनके अवचेतन में कहीं बुद्ध बसे हैं, कहीं महावीर तो कहीं वैशाली और लिच्छिवियों का गणतंत्र है। जो यकीन करते हैं कि यही वह धरती है जहां से वीर कुंअर सिंह अंग्रेजों की गुलामी खत्म करने निकले थे। जहां बिरसा मुंडा और सीधू कान्हू ने उलगुलान किया था। जहां पीतांबर और नीलांबर ने सत्तावन में क्रांति का बिगुल बजाया था।

जहां महात्मा गांधी ने चंपारण सत्याग्रह शुरू किया और जहां जयप्रकाश नारायण पैदा हुए जिसके बारे में दिनकर ने लिखा था कि जिसके चरण चिह्न इतिहास अपने उर पर अंकित कर लेता है। वही जयप्रकाश जिन्होंने लोकतंत्र को नया रूप देने के लिए 1974 में 'संपूर्ण क्रांति' का आह्वान किया। वहीं जहां बाबू राजेंद्र प्रसाद जैसे देशभक्त पैदा हुए।

इस देश की नैतिक लोकतांत्रिक शक्तियां यह भूल रही हैं कि रावण के आमंत्रण पर उसके पक्ष में युद्ध करने के लिए पूंजीवाद और फासीवाद की प्रचंड शक्तियां मैदान में उतर चुकी हैं। वे रावण को अंक में लेकर घूम रही हैं। अविभाजित बिहार पहले अपने खनिजों के कारण आंतरिक उपनिवेश बना था, अब पश्चिमी तट के कारपोरेट द्वय और राजनेता द्वय के लिए चारागाह बनने की तैयारी में है। बिहार क्या, पूरा देश इन शक्तियों के चंगुल में फंस चुका है। पंजाब और हरियाणा से प्रतिरोध जरूर उभरता है, लेकिन वह चुनावी विजय और राजनीतिक सत्ता के परिवर्तन तक पहुंच नहीं पाता।

डॉ. आंबेकर ने कहा था कि लोकतंत्र न तो सिर्फ चुनावी प्रणाली है, न ही सिर्फ संस्थाओं से निर्मित होता है। वह निर्मित होता है एक ऐसे समाज से, जहां पर भाईचारा होता है, जहां होती है पारदर्शिता और सामाजिक, आर्थिक समानता। वह एक प्रणाली से अधिक संस्कृति है। आज धनबल, सत्ताबल और हिंसक भाषा के प्रहार से घायल लोकतंत्र अपनी प्राण रक्षा के लिए छटपटा रहा है। उस रक्षा की आशा सिर्फ बिहार से करना कुछ अधिक ही था। इसलिए देश की लोकतांत्रिक शक्तियों को बिहार को क्षमा करते हुए अलोकतांत्रिक शक्तियों की नकल नहीं करनी चाहिए। उन्हें नैतिक शक्तियों की आराधना करते हुए साधन की पवित्रता के साथ इस लंबी लड़ाई को चलाना चाहिए। (सप्रेस)

आबोहवा

संजय तेलंग

वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक

इंदौर का मौसम इंसानों के साथ परिंदों को भी प्रिय

मालवा को अपने शानदार मौसम की वजह से दुनियाभर ख्याती मिली। न अधिक गर्मी और न अधिक ठंड। बारिश भी जरूरत मुताबिक़ ही होती थी। मालवा का सबसे बड़ा नगर होने से इंदौर शहर को इसका सबसे अधिक लाभ मिला। बाहर से लोग यहां आए, उन्होंने मौसम देखा, यहां के निवासियों को परखा और मां अहिल्या की नगरी को अपना आशियाना और रोजी-रोटी कमाने का ठिकाना बना लिया। जब इंदौर की जनसंख्या एक लाख भी नहीं थी, तभी से यहां बाहर से आकर बसने वालों का सिलसिला शुरू हो गया था। अब तो आबादी 40 लाख पार कर चुकी है। इंदौर ने न सिर्फ लोगों को अच्छी आबोहवा दी, बल्कि उन्हें रोजगार जमाने के अवसर भी मुहैया करवाए। अब तो ऐसे लोगों की तीसरी पीढ़ी पुरखों के अच्छे निर्णय का लाभ उठा रही है। यह वही शहर है जहां कभी सुबह-शाम न केवल रास्तों और गलियों को बुहारा जाता था, बल्कि मशक के पानी से धुलाई भी होती थी। देश का सबसे स्वच्छ शहर तो इंदौर अभी कुछ वर्षों पहले ही बना है, लेकिन यहां पीढ़ियों से रह रहे लोगों को सफाई का महत्व बहुत पहले से पता था।

इंदौर की विशेषताओं के बखान की भूमिका की वजह यह है कि अपनी खासियतों से इस शहर ने इंसानों को ही नहीं परिंदों को भी आकर्षित किया। यह बात आश्चर्य में डाल सकती है। लेकिन, यकीन मानिए यह सौ-फीसदी सत्य है। इंदौर के शानदार मौसम के चलते ही यहां अनेक स्थानों पर परिंदों ने अपने आशियाने बना लिए थे। बढ़ती भीड़, कर्कश शोर और प्रदूषण से अब इनमें से अनेक तो अपना ठिकाना कहीं ओर बना चुके हैं, शेष भी संभवतः किसी शांत स्थान की तलाश में होंगे। परिंदों का पहला ठिकाना पंढरीनाथ मंदिर के पास प्राचीन वृक्ष था, वृक्ष अब भी है लेकिन परिंदों की उपस्थिति का अहसास अब पहले की तरह नहीं रहा। करीब 50-60 वर्ष पूर्व इस वृक्ष पर न जाने कहां से आए सैकड़ों परिंदों ने अपना आशियाना बना लिया था। सुबह पौ फटने पर जब वे दाने-पानी की तलाश में उड़ान भरते, तो पूरा क्षेत्र उनके चहकने के मधुर संगीत से गूंज उठता था।

इसी तरह सूरज ढलते ही जब वे अपने नीड़ में लौटते, तो उनकी आवाजें वहां से गुजरने वालों का ध्यान अपनी ओर खींचे बिना नहीं रहती थी। परिंदों की मधुर आवाज आसपास रहने वालों के अलावा दूर-दूर तक सुनाई देती थी। उन आवाजों को सुबह शाम सुन कर आनन्द उठाना लोगों की दिनचर्या का हिस्सा हो गया था। वृक्ष अब भी मौजूद हैं, लेकिन उस पर रहने वाले परिंदे गिने-चुने ही बचे हैं, जो रस्म अदायगी कर रहे हैं। अब तो वे लोगों का ध्यान भी नहीं खींच पाते। इसी तरह के

वृक्ष इंदौर के गांधी हाल उद्यान और नेहरू पार्क में भी थे। इन वृक्षों पर गौरैया और तोतों ने आशियाने बनाए थे। सुबह इन दोनों उद्यानों में वर्जिश करने पहुंचने वालों और संध्या को सैर-सपाटे के लिए पहुंचे लोग गौरैया और तोतों के चहकने की आवाजों का भरपूर आनंद उठाते थे। इंदौर में बरसों से रह रहे लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं।

इंदौर का सिरपुर तालाब तो प्रवासी पक्षियों के लिए एक प्रमुख आश्रय स्थल है, जहाँ हर साल हजारों पक्षी आते हैं। यह तालाब विभिन्न प्रकार के पक्षियों का घर है और पक्षी-प्रेमियों के लिए आकर्षण का एक महत्वपूर्ण केंद्र। इसे मध्य प्रदेश में प्रवासी पक्षियों की सबसे अधिक प्रजातियों को आकर्षित करने के लिए एक 'विशेष पक्षी क्षेत्र' के रूप में मान्यता प्राप्त है। सर्दियों में मध्य एशिया, साइबेरिया और यूरोप जैसे क्षेत्रों से प्रवासी पक्षी यहां आते हैं। स्थानीय और प्रवासी बत्तखें, बगुले, जैकाना, मूरहेन और अन्य जलचर पक्षियों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। यहाँ ग्रेटर फ्लेमिंगो, यूरेशियन हॉबी और कॉलरड प्रेटिनकोल जैसे दुर्लभ पक्षी भी देखे गए हैं।

अब गांधी हाल उद्यान के पास बने शास्त्री ओवर ब्रिज से गुजरने वाले हजारों वाहनों के शोर ने इस क्षेत्र की शांति भंग कर दी है। शाम को सुस्ताने वाले भी यहां से सिरदर्द ही साथ लेकर जाते हैं। परिंदों ने भी अपना कोई और शांत ठिकाना तलाश कर लिया। इसी तरह नेहरू पार्क उद्यान की दुर्दशा तो सभी जानते हैं। नवीनीकरण कार्य के चलते बरसों से उसमे प्रवेश करना ही मुश्किल हो गया है। लगता नहीं कि वहां के वृक्ष पर भी कोई परिंदा उजाड़ पार्क में बचा हो। ऐसे ही शांति भंग का शिकार हुए दो और स्थानों का उल्लेख यहां करना चाहूंगा। पहला है मल्हारगंज थाने के पास अस्पताल को ढकने वाला पुराना वृक्ष और शास्त्री मार्केट (गुजराती महाविद्यालय) के सामने स्थित लाल अस्पताल के पास का पुराना घना वृक्ष। ये दोनों वृक्ष भी परिंदों के पसंदीदा स्थान थे। सैकड़ों पंछियों ने इन पर अपना घर बसाया था। सुबह-शाम उनके चहकने के मधुर संगीत की सौगात ये शहर वासियों को निःशुल्क मुहैया करवाते थे। बढ़ते शोर से इनका भी हश्र अन्य की तरह ही हुआ। पंछी इन्हें छोड़ कर कहीं ओर बस गए। नई पीढ़ी को तो यह जानकारी तक नहीं होगी।

परिंदों की इंदौर में एक और पसंदीदा जगह का उल्लेख किए बिना यह विवरण अधूरा रहेगा। वह जगह है यशवंत क्लब के सामने वाली रोड। जो लोग इंदौर में इस रोड से गुजरे होंगे, वे यहां की असीम शांति से वाकिफ होंगे। इस शांत रोड के दोनों किनारों पर अनेक घने वृक्ष हैं। जानते हैं इन वृक्षों को कौन से पंछी ने आशियाने के लिए चुना था, तो आपकी जानकारी के लिए बता देते हैं, वह पंछी है कौवा। हजारों कौवों के आशियाने होने से इस रोड से गुजरने

वाले कांव-कांव को सुन रोमांचित हो जाया करते थे। श्राद्ध पक्ष में जब कौवे दिखाई नहीं देते, इंदौर के पुराने लोग कौवों का अंश यहां उन तक पहुंचा दिया करते थे। बड़ी संख्या में कौवों की उपस्थिति के चलते बरसों पहले लोगों ने इस रोड को 'कौवा गली' ही नाम दे दिया था।

मीडिया तंत्र को गंभीरता से लिया जाना चाहिए

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक उपयोग केवल और केवल मीडिया तंत्र ही कर सकता है। हालांकि यह अधिकार जनसाधारण को भी मिला हुआ है। लेकिन जनसाधारण का दायरा अत्यंत सीमित होता है। इसके विपरीत मीडिया तंत्र अपने-अपने पाठकों एवं दर्शकों के चलते एक बड़े वर्ग एवं क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। एकल स्वरूप में भी हर छोटे बड़े मीडिया तंत्र का अपना-अपना एक प्रभाव क्षेत्र होता है। इस दृष्टि से जनसाधारण की पीड़ा या किसी तरह की गुहार को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करने में मीडिया तंत्र की ही महत्वपूर्ण भूमिका रहा करती है।

वैसे विभिन्न खबरों पर संज्ञान लेने के लिए प्रशासन तंत्र है, लेकिन कोई खबर मात्र प्रकाशित या प्रसारित होकर रह जाएं, तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता केवल मन का गुबार निकालने तक ही सीमित होकर रह जाएगी। फिर उसका कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं रहेगा, जो उसकी सार्थकता सिद्ध कर सके। दरअसल होना यह चाहिए कि प्रकाशित या प्रसारित होने वाली समस्याओं का एक निश्चित समय सीमा में त्वरित निराकरण किया जाएं। मीडिया के माध्यम से जनसाधारण की ओर से उठाई गई मांग के औचित्य को समझते हुए उसकी पूर्ति के प्रयास किए जाएं।

हर एक खबर पर संबंधित विभाग या वर्ग द्वारा तुरंत संज्ञान लेना अत्यंत आवश्यक करार दिया जाए। वैसे कुछ एक अधिकारी एवं कर्मचारी प्रकाशित या प्रसारित समस्या पर स्वतः संज्ञान लेते देखे गए हैं। लेकिन अधिकांश समस्या मूलक खबरें प्रकाशित या प्रसारित होकर ही रह जाती है। यह एक आश्चर्यजनक तक है कि कहीं किसी खबर का संज्ञान लेने पर संबंधित संस्थान द्वारा उसे अपनी एक अहम उपलब्धि करार दिया जाता है। जबकि व्यवहार में ऐसा सामान्य रूप से ही होना चाहिए। ऐसा होने पर ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक परिणाम देखने को मिल सकेगा।

अन्यथा एकल स्वरूप में जनसाधारण में इतना सामर्थ्य कहां कि शासन-प्रशासन और सत्तापक्ष से जुड़े राजनेताओं से कोई सुलगता हुआ सवाल कर सके। हालांकि प्रतिपक्षी दलों के राजनेता उनके समर्थक तथा कार्यकर्ता अपनी आवाज में वजन जरूर रखते हैं, लेकिन इन्हें अपने या अपने दल के बलबूते ही सीमित अवस्था में सुरक्षित वातावरण मिल सकता है। वैसे ऐसा भी मान लिया जाता है कि विरोधी पक्ष से उठी हुई आवाज राजनीतिक पूर्वाग्रह से प्रेरित हुआ करती है। ऐसी स्थिति में आम आदमी के मन की आवाज को मीडिया तंत्र ही प्रभावशाली तरीके से मुखरित कर सकता है।

दरअसल मीडिया ही वह माध्यम है जिसके चलते अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक उपयोग संभव है। आए दिन मीडिया के माध्यम से शासन प्रशासन और आम नागरिकों के सम्मुख तरह-तरह की खबरें आया करती है। जब कोई बात खबर की परिभाषा के दायरे में आती है तब इसका प्रकाशन या प्रसारण जन-जन को अवगत करा देता है। अपेक्षा यह की जाती है कि संबंधित वर्ग इस खबर पर ध्यान दें। विशेष रूप से शासन-प्रशासन यह सुनिश्चित करें कि किसी खबर में विसंगति का उल्लेख हुआ है तो उसे सुसंगत बनाया जाएं और समस्या सामने आई है तो उसका निराकरण किया जाएं।

वैसे खबर वह भी बनती है जो रचनात्मक एवं सूचनात्मक हुआ करती है। इसके चलते सामाजिक परिदृश्य में जन-जन की जानकारी में इजाफा होता है और कहीं किसी खबर से प्रेरणा भी मिलती है। दरअसल मीडिया ही वह तंत्र होता है जो जन-जन के दुख दर्द की आवाज को मुखरित करता है। यही नहीं अपितु समय आने पर शासन प्रशासन को आड़े हाथों लेने से भी परहेज नहीं करता। हालांकि राजनीति की कुटिल चाल के चलते आज मीडिया दो भागों में विभाजित करार दिया जाने लगा है। यही कारण है कि मीडिया की स्वतंत्र खबरों को भी संदेह की परिधि में लिया जाने लगा है

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में हालात ऐसे निर्मित होते जा रहे हैं कि शासन प्रशासन का पक्ष रखने पर या विरोध करने पर मीडिया को अलग-अलग तरह से संबोधित किया जाने लगा है। इसके चलते निष्पक्ष तथा तटस्थ पत्रकारिता की निष्पक्षता एवं तटस्थता संदेह की परिधि में दिखाई देने लगी है। इसके चलते अलग-अलग मीडिया संस्थानों की व्यापक जनहित के प्रति समर्पित भूमिका को लेकर स्वाभाविक जन विश्वास में कमी आती जा रही है। यह स्थिति कुल मिलाकर न केवल लोकतंत्र की गरिमा को धूमिल कर रही है अपितु अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को भी पूर्वाग्रह से प्रेरित दर्शा रही है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

यशवंत गोरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सब कुछ सीखा हमने न सीखी राजनीति

यदि आप अपने और आपके रिश्तेदारों की कुंडली सार्वजनिक करना चाहते हैं तो किसी चुनाव में खड़े हो जाईए। चाहे वह सरपंच को या संसद का । आपके सामने खड़ा आपका विरोधी उम्मीदवार आपके और आपके रिश्तेदारों की पूरी कुंडली तैयार कर सार्वजनिक कर देगा। वह आपके सारी जिंदगी के कारनामों को ढूंढ -ढूंढ कर लाएगा आपकी कमाई का जरिया क्या है ? आपके रिश्तेदार कौन -कौन हैं ?और वे किन धंधों में शामिल हैं? सब अपने आप सामने आ जाएगा चाहे झूठा हो सच।

आप किन किन रसूखदारों से संबंध रखते हैं? आप और आपके रिश्तेदारों के वैध -अवैध धंधे क्या है ? कुछ जानकारियां तो ऐसी सामने आ जाएगी जिससे आप खुद चौक जाएंगे जो आपको भी पता नहीं होंगी। देश की सबसे बड़ी पंचायत संसद में विपक्ष के नेता ने प्रधान सेवक के बारे में हाल ही में एक जानकारी उजागर की कि वोट के लिए वे आप चाहे तो डांस भी कर देंगे। वैसे उन्हें भी कई जगह डांस करते देखा गया है।

राजनीति जो न कराये कम ही है। आप थोड़ी - थोड़ी भाषाएँ सब सीख लो और भाषण की शुरुआत वहां की भाषा में कर दो तो सामने बैठी जनता खुश होकर तालीयाँ बजाने लगती हैं और आपकी जयजयकार करने लगती हैं। जहां आप भाषण दे रहे हैं वहाँ की टोपी, पगड़ी या पोषाक पहन लो तो जनता आपको अपना समझने लगती हैं।कई बार तरह -तरह के मुखोटे भी लगाने पड़ते है। वेशभूषा भी बदलनी पड़ती है, बहुरुपिया बनना पड़ता है। चुनाव जीतना है तो वो सब आपको करना पड़ेगा जिससे आपका वोटर खुश हो। एक कहावत बहुत प्रसिद्ध है 'वक्त पड़े बांका, तो गधे को कहो काका'। पर वही काका आपको एक दिन दुल्लती भी मार सकता है। हमारे देश के एक युवा नेता है उन्होंने यह बताने की कोशिश की कि अगर आपको वोट चाहिए तो क्या -क्या करना पड़ता है।

उन्होंने खुद ने कई प्रयोग किये है । रेलवे स्टेशन चले गए और कुली बनकर अटेची सिर पर उठा ली , यह जानने के लिए कि जनता की मांगों का वजन कैसे उठाया जाता है। किसान बनकर खेत में धान की बोनी कैसे होती है सीखने की कोशिश की यह जानने के लिए कि वोटों की फसल कैसे उगाई जा सकती है। कुम्हार से चाक चलाकर मिट्टी के बर्तन बनाना सीखा इसलिए कि कच्ची मिटटी से पक्के बर्तन बनाये जाते है , जनता के वोट कैसे पक्के किये जाते है। कालेज के युवाओं के सामने पुश अप लगाकर सिक्स पैक बताएं ताकि जरुरत पड़ने पर 'मसल्स' की ताकत भी दिखाई जा सकें। चॉकलेट बनाना भी सीख लिया ताकि भावी वोटरों को चॉकलेट का लालच दिखाकर वोट पक्के किये जा सके। विकलांगों(दृष्टिहीन) से शतरंज की चालों को सीखा जिससे विरोधियों की चालों को समझ सके। मोहब्बत का शरबत बनाना सीखा और मोहब्बत की दुकान भी लगाई पर कोई खरीददार नहीं मिला। वैज्ञानिक बनकर आलू से सोना बनाने का दावा किया। कारपेंटर बन कर फर्नीचर बनाना सीखा कि कार्यकर्ताओं को घिस-छील कर कैसे जोड़ा जाए। मेकेनिक बनकर मोटर सायकल सुधारना सीखा जिससे अपनी राजनीनतक सफर में कभी गाड़ी ख़राब हो जाए तो ठीक कर सके। तालाब में कूदकर मछली पकड़ना सीखा कि बड़ी मछली कैसे छोटी मछली को खा जाती है। पेंटर बनकर छत पर पुट्टी लगाना इसलिए सीखा कि अपने दिए गए बयानों पर कैसे लीपापोती की जाए। नाव में बैठकर चप्पो चलाना भी सीखा कि अपनी नाव चलती भी रहे और डुबे भी नहीं और हम डूबे तो दूसरों को कैसे डुबाया जाए ।

जनेऊ धारण कर मंदिर- मंदिर दर्शन कर अपनी आस्था भी दिखाई। गोल टोपी पहन कर फोटोशूट भी कराया। सार्वजनिक रूप से अपने परिजनों के प्रति प्यार का इजहार भी किया। लाल- हरी किताबें जेब में रखकर अपने आप को पढ़ा लिखा भी घोषित किया। चुनावों के बाद थकान उतारने के लिए विदेशों में छुट्टी मनाने भी गए। देश को जोड़ने के लिए यात्रा भी की पर अपने ही लोगों को जोड़ कर नहीं रख सके। जबरन गले भी पड़ कर देख लिया। चौकीदार को चोर कह के भी देख लिया। कान पकड़ के माफ़ी भी मांग ली। अपने आप को युवा और मजबूत दिखाने के लिए टी शर्ट को अपना ड्रेस कोड बना लिया। सब कुछ कर के देख लिया बस अपनी पार्टी को मजबूत नहीं कर पाएं। राजनीति में आकर सब सीख लिया पर राजनीति करना नहीं सीखा। राज कपूर की फिल्म 'अनाड़ी' का वह गाना याद आता है 'सब कुछ सीखा हमने न सीखी ....'।

स्मृति शेष

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार है।

धर्मेंद्र: बेहतर इंसान जिसने खूब प्यार पाया

धर्मेंद्र की यादगार अनेक फिल्मों में हम उनकी अभिनीत– शोले, प्रतिज्ञा, मेरा गांव मेरा देश, चरस, , चुपके चुपके, सत्यकाम, हकीकत, राजा जानी, नया जमाना, धरमवीर, आया सावन झूमके, फूल और पत्थर, अनुपमा आदि तथा काजल, प्यार ही प्यार, पलकों की छांव में, शिकारी इत्यादि को रखना चाहेंगे। हालांकि उनकी फिल्मों की फेहरिस्त काफी लंबी है। धर्मेंद्र ने अपने बेटे सनी देओल और बॉबी देओल को लेकर ' यमला पगला दिवाना ' फिल्म भी बनाई जो बड़ी हिट रही और एक अन्य मूवी अपने का एक गाना ' अपने तो अपने होते हैं ' लोगों की जुबान पर चढ़ गया था। सनी देओल भी फिल्मों में छाये रहे तो बॉबी देओल को भी बड़े परदे ने अच्छा ही दिखाया लेकिन उनके एक वेब सीरीज ' आश्रम ' विवादों के घेरे में रही।

मशहूर, सदाबहार और दिल के साफ अपने समय के बेजोड़ अभिनेता धर्मेंद्र हमारे बीच नहीं रहे यह खबर उनके चाहने वालों के साथ उन सभी के लिये बुरी ख़बर है जिन्होंने उनकी फिल्मों को देखा। सत्तर, अस्सी, नब्बे के दशक और उसके पूर्व और बाद में भी धर्मेंद्र फिल्मी दुनिया में छाये रहे। कुछ बरस पहले धर्मेंद्र ने एक टीवी शो में खुद स्वीकारा था कि 'शायद अब कैमरा उनसे रूठ सा गया है। हृदय से अत्यंत भावुक धर्मेंद्र को यह एक सदमे की तरह था।' उनके फिल्मी सफर में एक दौर ऐसा भी आया जब वे फिल्मों से दूर रहे।

धर्मेंद्र की यादगार अनेक फिल्मों में हम उनकी अभिनीत- शोले, प्रतिज्ञा, मेरा गांव मेरा देश, चरस,, चुपके चुपके, सत्यकाम, हकीकत, राजा जानी, नया जमाना, धरमवीर, आया सावन झूमके फूल और पत्थर, अनुपमा आदि तथा काजल, प्यार ही प्यार, पलकों की छांव में, शिकारी इत्यादि को रखना चाहेंगे। हालांकि उनकी फिल्मों की फेहरिस्त काफी लंबी है।

धर्मेंद्र ने अपने बेटे सनी देओल और बॉबी देओल को लेकर 'यमला पगला दिवाना' फिल्म भी बनाई जो बड़ी हिट रही और एक अन्य मूवी अपने का एक गाना 'अपने तो अपने होते हैं' लोगों की जुबान पर चढ़ गया था। सनी देओल भी फिल्मों में छाये रहे तो बॉबी देओल को भी बड़े परदे ने अच्छा ही दिखाया लेकिन उनके एक वेब सीरीज 'आश्रम' विवादों के घेरे में रही। खैर...

मुझे स्मरण आता है जब पहले से शादी-शुदा धर्मेन्द्र और हेमा मालिनी का प्यार परवान चढ़ा था तब शोले सहित कई अन्य फिल्मों में उन्होंने साथ काम किया था। धर्मेंद्र- हेमा मालिनी की पहले कुड़माई और बाद में शादी पर मैंने केन्द्रित आलेख उस समय के दौरान लिखा था जिसे मीडिया ने भोपाल में विस्तार से प्रकाशित किया था। हेमा जी के अतिरिक्त धर्मेंद्र ने उस दौर की कई मशहूर अभिनेत्रियों के साथ फिल्में की थी। इनमें आशा पारेख, वहीदा रहमान शामिल हैं।

बीते समय में धर्मेंद्र एक टीवी शो 'इंडियन आयडल' में भी आये थे तब प्रतिभागियों द्वारा अपनी फिल्मों के लोकप्रिय गाने सुनकर उनकी आंखें भर आई थीं। स्पष्ट है कि धर्मेंद्र एक बेहतर इंसान और भावुक व्यक्ति थे । एक अन्य टीवी शो के दौरान धर्मेंद्र ने अनेक शेर सुनाये थे जिसे सुनकर लगता है कि शेरो शायरी में भी उनकी खासी दिलचस्पी रही होगी। अनेक

मशहूर शायरों के सेर उन्होंने अपनी यादों के झरोखे से स्मरण कर सुनाये थे।

एक और बात जो उनके व्यक्तित्व को अलग रूप में दिखाती है वो है पंजाब का रंग और खुशबू। फिल्मों में आने तथा अपने समय के मशहूर अभिनेता होने पर भी उनमें कोई घमंड दिखाई नहीं पड़ता था। बल्कि ठेठ पंजाबी गांव उनमें रचा- बसा दिखाई देता था। फिल्मों के शौकीन होने से हमने धर्मेंद्र अभिनीत शोले सहित उनकी ज्यादातर फिल्में देखी। धर्मेंद्र सहित शोले में अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, जया बच्चन और एक संवेदनशील अभिनेता संजीव कुमार ने यादगार अभिनय किया था। इस फिल्म ने जिस तरह का इतिहास रचा था वह अपने आप में बेजोड़ और ऐतिहासिक कहा जा सकता है। मथुरा से सांसद धर्मेंद्र की पत्नी हेमा मालिनी एक उत्कृष्ट नृत्यांगना भी है। अपने नृत्य कार्यक्रमों में उनकी बेटी भी उनका साथ निभाती है।

धर्मेंद्र स्वयं भी सांसद रहे लेकिन अमिताभ बच्चन की तरह शायद राजनीति उन्हें भी रास नहीं आई। तभी 60 के दशक से फिल्मों में आने वाले धर्मेंद्र ने तकरीबन 100 से अधिक हिट फिल्में दी। एक बार जब उनसे पूछा गया था कि क्या मशहूर फिल्म शोले में अमिताभ बच्चन को यादगार भूमिका दिलवाने में उनकी कथित सिफारिश मुख्य रही थी, धर्मेंद्र ने इस सवाल का जवाब हंसकर टाल दिया था। शानदार व्यक्तित्व और जज्बात के धनी धर्मेंद्र को जिस तरह के सम्मान मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया इस बात का फैसला शायद आने वाले वक्त में हो सकेगा। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि उन्होंने अपने चाहने वालों और दर्शकों का दिल जीत लिया था । सो, अपने वक्त के मशहूर सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र का हिन्दी फ़िल्मों में योगदान सदैव अमिट रहेगा। ऐसे महान कलाकार को विनम्र श्रद्धांजलि।

इन दिनों जीवन

ब्रजेश कानूनगो

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

कोहरा, कड़ाके की ठंड और कर्तव्य पालन

शीतकाल के इस समय में बड़ी समस्या आ रही थी दादाजी के समक्ष। कड़ाके की ठंड ने उनकी सारी गरमाहट को जैसे दबोच लिया है। नियमित कर्तव्य पालन में बड़ी दिक्कत आ रही है। सब तरफ कोहरा छाया हुआ है। पोते में स्कूल जाने की गर्मी नहीं है, दादा की सरगर्मी कोई काम नही आ रही। सारे प्रयास विफल हो रहे। ऊपर से सोसायटी के वाट्सएप ग्रुप में संदेशे आने लगे कि बच्चे आपके हैं, कलेक्टर या सरकार के नहीं, ठंड में उन्हें स्कूल मत भेजें। लेकिन दादा का पुराना नेहरूकालीन मस्तिष्क यह बात स्वीकारने को तैयार नहीं। खुद की दादी के निधन हो जाने पर भी बचपन में उन्हें स्कूल भेज दिया गया था। पर अब नया देश था, नया संसार था।

उस दिन सुबह से वे उसे जगा रहे थे। पर वह बिस्तर छोड़ने को तैयार ही नहीं था। रजाई एक तरफ से उलेटते तो वह दूसरी तरफ से खींच कर मुंह ढंक लेता। यों सामान्य स्थितियों में भी सुबह सात बजे स्कूल जाने में उसको अपनी स्वर्गवासी नानी जी याद आने लगती थी तब कड़कड़ाती ठंड में तो बड़ी मुश्किल हो रही थी। ऊपर से बेमौसम बरसात और ओला वृष्टि ने जैसे अलास्का या साइबेरिया को ही घर तक पहुंचा दिया था। बिना कुछ खर्च किए पर्यटन के सुख और आनंद का बंदोबस्त मुफ्त में उपलब्ध था।

पोते को न उठना था तो नहीं उठा। उसे स्कूल बस तक पहुंचाने की जिम्मेदारी दादा का पारिवारिक कर्तव्य था। वैसे सरकार की कल्याणकारी नीतियों और योजनाओं के फायदों का प्रचार प्रसार के राष्ट्रीय दायित्व को सोसायटी के वाट्सएप ग्रुप में नियमित रूप से निभाते रहते हैं। सरकारी सेवा से रिटायरमेंट के बाद कुछ पारिवारिक दायित्व भी उनके लिए अब निर्धारित कर दिए गए थे।

शीतकाल के इस समय में बड़ी समस्या आ रही थी दादाजी के समक्ष। कड़ाके की ठंड ने उनकी सारी गरमाहट को जैसे दबोच लिया है। नियमित कर्तव्य पालन में बड़ी दिक्कत आ रही है। सब तरफ कोहरा छाया हुआ है। पोते में स्कूल जाने की गर्मी नहीं है, दादा की सरगर्मी कोई काम नहीं आ रही। सारे प्रयास विफल हो रहे। ऊपर से सोसायटी के वाट्सएप ग्रुप में संदेशे आने लगे कि बच्चे आपके हैं, कलेक्टर या सरकार के नहीं, ठंड में उन्हें स्कूल मत भेजें। लेकिन दादा का पुराना नेहरूकालीन मस्तिष्क यह बात स्वीकारने को तैयार नहीं। खुद की दादी के निधन हो जाने पर भी बचपन में उन्हें स्कूल भेज दिया गया था। पर अब नया देश था, नया संसार था।

बहरहाल, पोते को जगाने, बिस्तर छुड़वाने की माथापच्ची से मुक्त होकर उन्होंने ताजा अखबार उठा लिया। हालांकि अखबार में भी कोहरा छाया हुआ था। उसने भी दो दो जैकेट धारण कर रखी थी और उनमें भी हीटर,ऊनी कपड़ों, गर्मी लाने के साधनों और कंबलों के विज्ञापन छपे थे। सरकारों के गरमाहट से भरे बड़े बड़े पोस्टर छपे थे। जीवन में गर्मी की

गारंटियां थीं।

भीतर के पृष्ठों पर वे ही खबरें थीं जो रात को ही वे टीवी पर देख चुके थे। जिन खबरों को वे विस्तार से पढ़ना चाहते थे वे थी ही नहीं या जो थोड़ी बहुत दिखाई दे रहीं थी वे भी ठिठुरकर छोटी हो गई थीं।

दो जैकेटों के बाद अखबार में जो सुर्खियां थी उनमें भी एक्सप्रेस हाइवे पर वाहनों के टकराने और दुर्घटनाओं की सूचनाएं थीं। नीतियों, कूटनीतियों में कोहरे और विचारहीनता की वजह से देशों और नेताओं के टकराव के शोले भड़कने की रिपोर्टिंग नजर आ रही थीं। आसमान में सूरज नहीं था पर राजनीति के आकाश में कई सूर्य और नक्षत्र अपनी तेजस्विता से कोहरे को भेदने की सफल,असफल कोशिश करते दिखाई दे रहे थे।

चारों तरफ कोहरा घना था। दृश्यता सिमट गई थी। औसतन सौ मीटर रह गई थी। कहीं कहीं इससे भी कम। कोहरा इतना अधिक प्रभावी था कि आंखें तो आंखें दिमाग भी जैसे शून्य होता जा रहा था। न कुछ दिखता था न कुछ सोच पाता था। गजब का कोहरा काल था यह।

तीसरे पन्ने पर जैसे ही उनकी एक खबर पर दृष्टि पड़ी उन्होंने बड़ी राहत महसूस की। कलेक्टर ने अगले सात दिनों के लिए सभी स्कूलों को सुबह सुबह की बजाए प्रातः दस बजे से खोलने के निर्देश दे दिए थे। कोहरे के सामने सबने हथियार डाल दिए थे। सच है दुर्घटनाओं को रोकना है, परेशानियों से बचना है, सुखी, प्रसन्न रहना है तो कोहरे और अल्प दृश्यता को गले लगाने में ही भलाई है।

दादाजी ने अखबार को समेटकर मोबाइल उठाया और सोसाइटी के ग्रुप में सरकार के निर्णय और कलेक्टर के नए आदेश को प्रसारित करने का राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन प्रारंभ कर दिया। दृश्यता अब केवल सात इंच रह गई थी। कोहरे की वजह से दूरदृष्टि उनकी ही नहीं पूरे समाज की गड़बड़ा गई है। न जाने यह कोहरा कब छटेगा!

शब्द श्रद्धांजलि

लाल बहादुर श्रीवास्तव

बिछुड़ गये जय से वीरू

दिलीप कुमार द्वारा कहे ये शब्द अक्षरश: सत्य है कि धर्मेंद्र जैसा सुदर्शन सुंदर पर्सनलिटी वाला अभिनेता उस दौर में फिल्मी दुनिया में कोई और नहीं था। सबके साथ साथ वे बड़े ही संवेदनशील मुस्कराहट बांटने वाले शानदार एक्शन, रोमांटिक,बहुमुखी प्रतिभा के अभिनेता थे। उनका प्यार भरा नाता अपने समकक्ष कलाकारों के साथ हमजोली वाला रहा, वहीं वे शीर्ष कलाकारो से लगाकार छोटे-छोटे कलाकारों का सम्मान करते थे इतना ही नहीं फिल्मी इंडस्ट्रीज से जुड़े तमाम जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहते थे।शायद ही कोई उनका दुश्मन रहा होगा। धर्मेंद्र बहारों की तरह सदाबहार हिमैन थे। फिल्मी दुनिया के जगमगाते सितारे शोले में अमिताभ बच्चन के साथ वीरू की भूमिका निभाने वाले संवेदनशील कलाकार धर्मेन्द्र का निधन फिल्मी दुनिया के लिए ही नहीं उनके तमाम शुभचिंतकों के लिए बहुत बड़ी क्षति है। देवानंद,राजेश खन्ना, दिलीपकुमार, मनोजकुमार के बाद धर्मेन्द्र का जाना फिल्म के उस स्वर्णिम युग का जाना है जिनके जीवंत अभिनय ने हास्य रोमांटिक पारिवारिक फिल्मों में शानदार अभिनय के माध्यम से पब्लिक का मनोरंजन तो किया ही साथ ही पारिवारिक पारस्पारिक रिश्तों में मिठास घोलने का नेक काम किया है।

जब भी मैं सर्व शक्तिमान ईश्वर से मिलूंगा मैं उनके सामने अपनी एकमात्र शिकायत रखूंगा - हे! ईश्वर तुमने मुझे धर्मेंद्र की तरह इतना खूबसूरत सुंदर हैंडसम क्यों नहीं बनाया?

ये बात अभिनय सम्राट दिलीप कुमार ने 1997 में फिल्मफेयर लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार देते हुए धर्मेंद्र के सम्मान में खुले मन से कही थी।

दिलीप कुमार द्वारा कहे ये शब्द अक्षरशः सत्य है कि धर्मेंद्र जैसा सुदर्शन सुंदर पर्सनलिटी वाला अभिनेता उस दौर में फिल्मी दुनिया में कोई और नहीं था। सबके साथ साथ वे बड़े ही संवेदनशील मुस्कराहट बांटने वाले शानदार एक्शन, रोमांटिक,बहुमुखी प्रतिभा के अभिनेता थे। उनका प्यार भरा नाता अपने समकक्ष कलाकारों के साथ हमजोली वाला रहा, वहीं वे शीर्ष कलाकारो से लगाकार छोटे छोटे कलाकारों का सम्मान करते थे इतना ही नहीं फिल्मी इंडस्ट्रीज से जुड़े तमाम जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहते थे। शायद ही कोई उनका दुश्मन रहा होगा। धर्मेंद्र बहारों की तरह सदाबहार हिमैन थे।

फिल्मी दुनिया के जगमगाते सितारे शोले में अमिताभ बच्चन के साथ वीरू की भूमिका निभाने वाले संवेदनशील कलाकार धर्मेन्द्र का निधन फिल्मी दुनिया के लिए ही नहीं उनके तमाम शुभचिंतकों के लिए बहुत बड़ी क्षति है। देवानंद,राजेश खन्ना, दिलीप कुमार, मनोजकुमार के बाद धर्मेन्द्र का जाना फिल्म के उस स्वर्णिम युग का जाना है जिनके जीवंत अभिनय ने हास्य रोमांटिक पारिवारिक फिल्मों में शानदार अभिनय के माध्यम से पब्लिक का मनोरंजन तो किया ही साथ ही पारिवारिक पारस्पारिक रिश्तों में मिठास घोलने का नेक काम किया है।

धर्मेंद्र ने फ़िल्मी दुनिया के रूपहले पर्दे पर लगभग सात दशक तक 300 से भी अधिक फिल्मों में बेजोड़ अभिनय कर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया था। पंजाब का खूबसूरत गठीला जाट नौजवान सबकी आंखों का वो चमकता सितारा रहा जिसने प्यार मोहब्बत का पैगाम देश के दर्शकों में बांटा।

धर्मेंद्र फिल्मफेयर पत्रिका द्वारा आयोजित नई प्रतिभा के राष्ट्रीय स्तर पर अभिनय में विजेता रहे। 8 दिसम्बर 1935 को नसराली पंजाब में जन्में धर्मेंद्र ने 1960 में अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म दिल भी तेरा हम भी तेरे के साथ अपना फिल्मी कैरियर शुरू किया था। फिर कभी मुड़कर नहीं देखा कई समकक्ष स्टार उनके समय में आये वे नदी की तरह अपने कुशल अभिनय से अभिनय के शानदार बहाव में बहते हुए फिल्मी इंडस्ट्रीज में स्थापित कलाकार अभिनेता बने रहे।

उनकी श्रेष्ठ फिल्में -आई मिलन की बेला 1965, फूल और पत्थर 1967, मेरा गांव मेरा देश 1972, यादों की बारात1974,रेशम की डोरी 1975,नौकर बीबी का 1984, घायल 1986 के लिए उन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा फिल्मी दुनिया में श्रेष्ठ योगदान के लिए धर्मेंद्र को 2012मे पद्मभूषण के सम्मान से विभूषित किया गया।

दुनिया के सबसे हैंडसम पुरुष का खिताब भी धर्मेंद्र के नाम रहा है जिसे आज तक कोई तोड़ नहीं पाया है। हेमा मालिनी के साथ दोनों की जोड़ी ने

अभिनय के रंग रंगीले रंग ऐसे बरसाए कि वे हेमा को अपना बना बैठे। दोनों की जोड़ी ने सीता और गीता,राजा रानी, शराफत, चाचा भतीजा, आजाद,,नया जमाना,पत्थर और पायल, तुम हसीन मे जवान जूगनू,दोस्त,मां,चरस,फिल्मों में एक साथ काम किया।शोले फिल्म के पचास सालों के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म से शोले को नवाजा गया।

अभिनेता के साथ साथ धर्मेंद्र भारतीय जनता पार्टी के नेता भी रहे । राजस्थान के बीकानेर निर्वाचन क्षेत्र से 15वीं लोकसभा के सक्रिय सदस्य रहे।लेकिन राजनिति रास नहीं आई।

जल्दी ही राजनीति दूर हो गये ।

धर्मेंद्र की सदाबहार फिल्मों के गीत,ये दोस्ती हम नहीं तोडेगे,पल पल दिल के पास, झिलमिल सितारों का आंगन होगा,आपके हसीन रुख पे,काजल वाले नैन मिला के,चंदा मामा से प्यारा मामा,इन बहारों में,कोई हसीना जब रूठ जाती है,काली पलक तेरी गौरी,दिल का भंवर करें पुकार,एक हसीन शाम को,जैसे अनेकानेक गीत है । धर्मेंद्र के लिए सर्वाधिक गीत गाने वाले मोहम्मद रफी है जिन्होंने धर्मेंद्र की अदाकारी पर कई सुमधुर गीत अपने लबों से गुनगुनाए है।

1970 के साल में धर्मेंद्र की एक साथ नौ हिट फिल्मों ने स्टारडम का ऐसा इतिहास रचा कि धर्मेंद्र का नाम फिल्मी इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया।

शेरो शायरी के शोकीन बेबाक कहकहों से अपने दर्शकों को प्यार की गंगधार लुटाने वाले धर्मेंद्र पाजी सबकी आंखों में बसे रहेंगे। पल पल दिल के पास रहेंगे। चांद सितारे से चमकते दमकते रहेंगे फिल्माकाश ही नहीं करोड़ों भारतीय दशकों के दिलों में। आज आसमां भी रो रहा है उनके जाने पे गुनगुना रहा है ...

आज मौसम हूं बड़ा बेईमान है बड़ा
बेईमान है आज मौसम।

स्मृति शेष

डॉ. कुमार ध्रुव
लेखक साहित्यकार हैं।

धर्मेंद्र के बारे में सोचते हुए

धर्मेंद्र की लोकप्रियता का आधार कभी उनकी 'ही-मैन' वाली छवि नहीं रहा बल्कि वह तो फिल्मी दुनिया ने उन पर डाल दी। असली धर्मेंद्र तो वह थे जो शूटिंग से लौटकर यूनिट के सबसे छोटे लड़के से भी उसी बराबरी से बात करते थे, जैसे सेट पर किसी बड़े निर्देशक से। उनकी आंखों में एक ऐसी विनम्रता बसती थी जो आजकल दिखाई नहीं देती। अपनी जगह को लेकर कोई घमंड नहीं, अपनी उपलब्धियों पर कोई गर्व नहीं। यह विनम्रता किसी अभिनय स्कूल से नहीं आती; यह आदमी की मिट्टी से आती है, वही मिट्टी जिसमें पंजाब की सुगंध है और वही मिट्टी जिसने उन्हें बीकानेर के लोगों से जोड़ा था।

धर्मेंद्र के बारे में सोचते ही मन में सबसे पहले उनके अभिनय की नहीं, उनकी सादगी की आकृति उभरती है। एक ऐसा आदमी जिसकी मुस्कान में किसी बड़े कलाकार की चमक नहीं, किसी आम आदमी की सहजता थी। यही वजह है कि पिछले दिनों जब मीडिया ने उनकी मौत की झूठी खबर बिना जांचे-परखे उछाल दी, तो दुख सिर्फ अफवाह का नहीं था; दुख इस बात का था कि जिस आदमी ने अपनी पूरी जिंदगी को इतनी गरिमामय शांति से जिया, उसकी जीवन-रेखा को भी हमने बाज़ारू अधीरता से मापना शुरू कर दिया। यह अफवाह धर्मेंद्र के नहीं, हमारी संवेदनाओं के मरने की घोषणा थी।

धर्मेंद्र की लोकप्रियता का आधार कभी उनकी 'ही-मैन' वाली छवि नहीं रहा बल्कि वह तो फिल्मी दुनिया ने उन पर डाल दी। असली धर्मेंद्र तो वह थे जो शूटिंग से लौटकर यूनिट के सबसे छोटे लड़के से भी उसी बराबरी से बात करते थे, जैसे सेट पर किसी बड़े निर्देशक से। उनकी आंखों में एक ऐसी विनम्रता बसती थी जो आजकल दिखाई नहीं देती। अपनी जगह को लेकर कोई घमंड नहीं, अपनी उपलब्धियों पर कोई गर्व नहीं। यह विनम्रता किसी अभिनय स्कूल से नहीं आती; यह आदमी की मिट्टी से आती है, वही मिट्टी जिसमें पंजाब की सुगंध है और वही मिट्टी जिसने उन्हें बीकानेर के लोगों से जोड़ा था।

बीकानेर की सांसदी धर्मेंद्र के लिए राजनीति का रास्ता नहीं थी; वह अपने लोगों के पास रहने की एक बेढंगी-सी इच्छा थी। वह संसद की बहसों में चमकदार नेता की तरह नहीं बोले लेकिन लोगों के बीच जाकर उनकी दिक्कतें सुनीं। राजनीति में उनके कदम हमेशा अनगढ़ लगे, जैसे कोई बड़ा पेड़ अचानक कंक्रीट पर रोप दिया गया हो। पर आम जनता ने उनसे कभी उम्मीदें नहीं छोड़ीं, क्योंकि धर्मेंद्र राजनीति में भी वही थे सीधे, सरल, बिना दिखावे के। उनके चाहने वाले यह बात आज भी दोहराते हैं कि 'धरम प्यारे लगते हैं

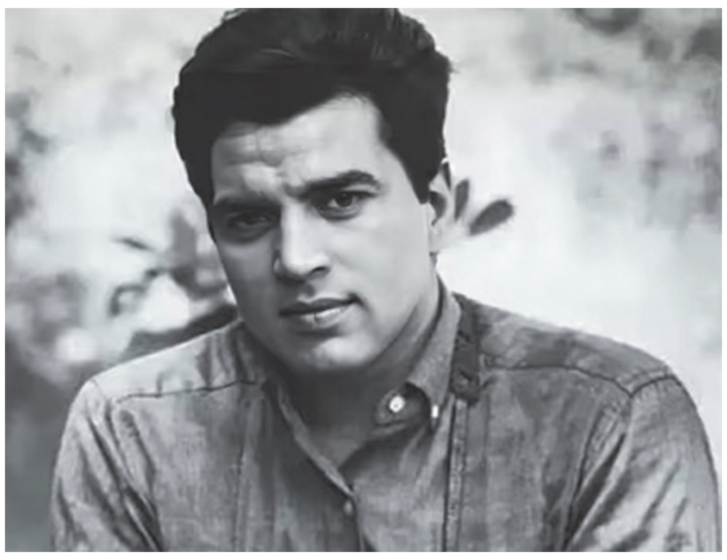

क्योंकि वे बदलते नहीं।' यह स्थिरता आज की राजनीति में दुर्लभ है।

उनकी फ़िल्मों का जादू सिर्फ हिंदी सिनेमा की सफलता नहीं था; वह हमारे रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा बन गया था। 'अनुपमा' का मौन, 'बंदिनी' का संयम, 'सत्यकाम' का नैतिक संघर्ष ये किरदार किसी अभिनेता की जीत नहीं थे; यह धर्मेंद्र की अपनी भीतरी कोमलता का विस्तार थे। और जब 'शोले' में वीरू पानी की टंकी पर चढ़कर प्रेम की पुकार लगाता है, तो वह दृश्य आज भी मज़ाक में प्रयोग होता है, पर उसकी गहराई में एक अधूरा, बेचैन, भावुक आदमी सांस लेता है। उनके संवाद 'ये हाथ नहीं फांसी का फंदा हैं' या 'बसंती, इन कुत्तों के सामने मत नाचना' ये सिर्फ संवाद नहीं, किसी समय की सांस्कृतिक धड़कनें हैं, जो आज मीम बनकर भी जिंदा हैं।

धर्मेंद्र की असली विरासत उनकी फिल्में नहीं, उनके किरदार नहीं, उनका कद भी नहीं बल्कि उनकी इंसानियत है। वे ऐसे आदमी थे जो बड़े पर्दे पर दिखते थे लेकिन भीतर से किसी गांव के चौपाल पर बैठे आदमी जैसे रहते थे। नाम, शोहरत, सफलता इन सबने उन्हें कभी कठोर नहीं बनाया और शायद यही वजह है कि उनका हर दर्शक आज भी कहता है, 'धर्मेंद्र हमारे जैसे थे- बस थोड़ा बेहतर।' यह 'थोड़ा बेहतर' ही असली सम्मान है।

इसलिए जब उनकी मौत की झूठी खबरें फैलती हैं, तो वह केवल एक कलाकार का अनादर नहीं; वह हमारी उस सामूहिक स्मृति का अनादर है जिसने धर्मेंद्र को सिर्फ अभिनेता नहीं, 'एक अच्छा आदमी' माना। धर्मेंद्र अभी ज़िंदा हैं सिनेमा में भी, कहानियों में भी और उन दिलों में भी जहाँ सादगी अभी भी शर्मिंदगी का कारण नहीं बनी है।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने मतदाता सूची के एसआईआर कार्य का निरीक्षण किया

धार। केंद्रीय राज्यमंत्री एवं धार लोकसभा क्षेत्र सांसद श्रीमती सावित्री ठाकुर ने देश भर में चल रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान अंतर्गत सोमवार को धार नगर के पीपली बाजार क्षेत्र का दोरा कर वार्ड 19 के बूथ क्रमांक 92 पर पहुंचकर क्षेत्रीय लोगों से चर्चा कर

इस अभियान संबंधित जानकारी ली एवं एसआईआर कार्य का निरीक्षण किया। साथ ही संचालित कार्यों की समीक्षा की। क्षेत्रवासियों से अपील है कि बीएलओ अधिकारियों को सही जानकारी प्रदान कर मतदान संबंधी कार्यों में सहयोग प्रदान करें। बूथ क्रमांक 92 के बीएलओ देवेंद्र सिंह ने मंत्री सावित्री ठाकुर को जानकारी देते हुए बताया कि इस बूथ का 90 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है सिर्फ 10 प्रतिशत कार्य बचा हे वह भी जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा इस अवसर पर एसआईआर भाजपा प्रभारी डॉ शरद विजयवर्गीय, जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे संजय शर्मा बूथ अध्यक्ष श्याम पिपलोदिया कैलाश पिपलोदिया राजेश डाबी तरुण सिसोदिया अनिल यादव पूर्व पार्षद सुंदरबाई तहसीलदार दिनेश उइके साहित अनेक भाजपा पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

यातायात नियमों का पालन नहीं, इसलिए बढ़ रहे सड़क हादसे

दस महीने में 919 हादसे, 352 लोगों की मौत, पिछले चार साल में 1289 लोगों ने गवाई जान

एस. द्विवेदी बैतूल। जिले में हर साल सडक़ हादसों की संख्या बढ़ते जा रही है। वर्ष 2025 में ही 1 जनवरी से अक्टूबर यानि 10 महीने में करीब 919 सडक़ हादसे हुए है, जिसमें 352 लोगों की जान चली गइ, वहीं 929 घायल हुए है, जबकि पिछ्ले वर्ष 2024 में 925 सडक़ हादसे में 352 लोगों की मौत और 940 घायल हुए थे। लेकिन अफसोस इसके बाद भी वाहन चालकों की लापरवाही कम नहीं हो रही है। हालात यह है कि आज भी लोग बिना हेलमेट के ही वाहन चलाते है और खुद के साथ-साथ अन्य लोगों की जान भी जोखिम में डालते है। हालांकि सडक हादसे रोकने के लिए पुलिस और ट्रॉफिक पुलिस, सडक़ पर उतरकर लोगों को जागरूक भी करती है, लेकिन वाहन चालक नहीं मानते है। परिणाम, सडक हादसे बढ़ रहे और लोग अपनों को खोकर जिंदगी भर का दर्द सह रहे है। कुछ वर्षों की बात की जाए को सबसे अधिक दुर्घटनाएं बाइक सवारों के कारण हुईं, जो तेज रफ्तार और हेलमेट न पहनने के कारण गंभीर रूप से घायल हुए या अपनी जान गंवा बैठे। यातायात पुलिस का साफ कहना है, कि हेलमेट सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है, खासकर बाइक सवारों के लिए। सडक़ दुर्घटनाओं में सबसे अधिक जानलेवा चोटें सिर पर ही आती हैं। सिर पर गंभीर चोट लगने से दुर्घटना में मृत्यु का खतरा 60 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। यही कारण है कि हेलमेट पहनने को अनिवार्य किया गया है, मगर शहर में हेलमेट पहनने की आदत बहुत कम है, जिससे हर वर्ष कई जानें चली जाती हैं।

10 महीने में 919 सड़क हादसे, चार साल में 3496– यातायात विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक बीते 10 महीने यानि जनवरी से अक्टूबर 2025 तक

919 सडक़ हादसे हुए। वहीं बीते चार साल यानि 2021 से लेकर 2024 तक जिले में कुल 3496 सडक हादसे हुए है, जिसमें 1289 लोगों की मृत्यु हुई है, वहीं 3781 लोग घायल हुए है। चार साल के आंकड़ों पर नजर डाली जाये तो वर्ष 2021 में कम सडक हादसे हुए और इनमें मृतकों और घायलों की संख्या भी कम ही रही है, जबकि सबसे ज्यादा सडक हादसे 1 जनवरी से 31 दिसंबर 2022 में दर्ज किये गये। वर्ष 2022 में 964 सडक हादसे हुए, जिसमें 378 लोगों की मौत हो गई और करीब 900 लोग घायल हुए।

हाईवे पर तेज रफ्तार और ग्रामीण सड़कें बनी कारण – जिले से गुजरने वाले भोपाल-नागपुर नेशनल हाईवे और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों पर ज्यादा सड़क हादसे होते है। जानकार बताते है कि नेशनल हाईवे बनने के बाद सड़क हादसों में भी इजाफा हुआ है। इसकी वजह यह है कि नेशनल हाइवे पर लोग वाहन चलाते समय नियमों का पालन नहीं करते है। वाहनों की रफ्तार निर्धारित से ज्यादा होती है। इससे वाहन दुर्घटना जैसी स्थिति बनती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की सड़क पर हादसों का कारण सड़कों का खराब होना, बिना हेलमेट और अंधे मोड पर तेज गति से वाहन चलाना, जैसे कई कारण सामने आते है।

हेलमेट जरूरी, फिर भी चालक करते है नजरअंदाज – बढ़ती सडक दुर्घटनाओं को देखते हुए प्रशासन गंभीर है। आये दिन अभियान चलाकर ट्रॉफिक पुलिस हेलमेट न पहनने वाले वाहन चालकों पर कार्यवाही करती है, लेकिन असर नजर नहीं आ रहा। बैतूल जिले की सडकों पर चालक बिना हेलमेट पहने धड़ल्ले से दो पहिया वाहन दौड़ाते हैं। पुलिस से बचने के लिए कई वाहन चालक हेलमेट साथ लेकर जरूर चलते हैं, लेकिन सिर पर नहीं पहनते। ऐसे में सवाल यही उठता है कि आखिर दुपहिया वाहन चालकों के लिए जब हेलमेट लगाना अनिवार्य है, फिर क्यों लोग अपनी आदत में सुधार नहीं ला रहे। पुलिस जब चेकिंग अभियान चलाती है तब लोग या तो जुर्माना भरते है या फिर पैरवी के लिए दौड़ लगाते हैं, लेकिन वाहन चलाते समय हेलमेट नहीं लगाते।

जानिए ... किस वर्ष में कितने सड़क हादसे, घायल और मौत

वर्ष	हादसे	घायल	मौत
2021	689	833	273
2022	964	900	378
2023	918	1108	286
2024	925	940	352

इनका कहना है –

सडक़ हादसों को कम करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविर और पेम्पलेट, बैनर, पोस्टर सहित अन्य माध्यमों से वाहन चालकों को जागरूक करते है। नियमों का उल्लंघन करने वालों पर चालानी कार्रवाही भी की जाती है, लेकिन इसके बाद भी वाहन चलाते समय लोग नियमों की अनदेखी और लापरवाही करते है। जिससे सडक हादसे होते है।

– **गजेन्द्र कैन,** प्रभारी, यातायात पुलिस, बैतूल

मध्य प्रदेश राज्य स्तरीय बेंचप्रेस डेडलिफ्ट प्रतियोगिता में धार को ऐतिहासिक सफलता

धार। मोहन चावड़ा (पहलवान) ने 93 वजन कैटेगरी में बेंचप्रेस में सबसे ज्यादा 147.5 किग्रा वजन उठाकर गोल्ड मेडल और स्ट्रांगमैन बनकर मिस्टर एमपी का खिताब प्राप्त किया धार। इंदौर के नेहरू स्टेडियम में बेंच प्रेस डेडलिफ्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें धार के खिलाड़ियों ने अनेक सफलताएं प्राप्त कर धार शहर को प्रदेश में

गौरवांवित किया। द मसल फैक्ट्री जिम के व्यवस्थापक मोहन चावड़ा (पहलवान) ने 93 वजन कैटेगरी में बेंचप्रेस में सबसे ज्यादा 147.5 किग्रा वजन उठाकर गोल्ड मेडल और स्ट्रांगमैन बनकर मिस्टर एमपी का खिताब प्राप्त किया। धार की ही साक्षी नामदेव ने 55 वजन कैटेगरी में 50 किग्रा बेंच प्रेस में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। अनिल गेहलोद और लखन बुंदेला ने भी प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। भागीरथ इमलिया और संतोष इमलिया ने भी प्रतियोगिता में सिल्वर मेडल प्राप्त कर द मसल फैक्ट्री जिम का और धार शहर का नाम गौरवांवित किया है।

विशेष गहन पुनरीक्षण के तहत डिजिटाइजेशन का कार्य सुचारू रूप से जारी रहे : अपर कलेक्टर

बैतूल। अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समयसीमा की बैठक में विशेष गहन पुनरीक्षण की समीक्षा कर सभी निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को निर्देशित किया कि मतदाताओं द्वारा भरे हुए गणना पत्रक के एकत्र करने और उनके डिजिटाइजेशन का कार्य सुचारू रूप से जारी रहे। विशेष गहन पुनरीक्षण के लिए नियुक्त सेक्टर मजिस्ट्रेट भी अपने क्षेत्र का सतत भ्रमण डिजिटाइजेशन के कार्य को गति प्रदान करें। उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद ने बताया कि एसआईआर में डिजिटलाइजेशन के कार्य में जिला अग्रणी जिलों में शामिल हैं। उन्होंने बताया कि जिले के कुल 1258295 मतदाताओं के लक्ष्य के विरुद्ध अभी तक 978757 मतदाताओं का डिजिटाइजेशन का कार्य कर लिया गया हैं। जोकि लक्ष्य का 77.78 प्रतिशत है। उन्होंने राजस्व प्रकरणों की समीक्षा कर सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रकरणों के निराकरण में कोताही न बरते। नामांकन, बंटवारा, सीमांकन, धारणाधिकार इतियादी प्रकरणों का निर्धारित समयसीमा में निराकरण सुनिश्चित कराएं। अपर कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों की भी विभागवार विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने शिकायतों का संतुष्टिपूर्वक निराकरण किए जाने के निर्देश सभी जिला अधिकारियों को दिए। उन्होंने 50 दिवस से अधिक की शिकायतों के भी निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने शीतकाल को देखते हुए सभी नगरपालिकाओं को सार्वजानिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित करने के लिए भी निर्देशित किया। अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट ने बैठक में ई ऑफिस प्रणाली के संचालन की भी विभागवार जानकारी लीं और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने समय अवधि पत्रों की भी समीक्षा कर सभी विभागीय अधिकारियों को टीएल प्रकरणों के त्वरित निराकरण के निर्देश दिए।

अमलतास मेडिकल कॉलेज, देवास में विश्व एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस जागरूकता सप्ताह का आयोजन

देवास। अमलतास मेडिकल कॉलेज में विश्व एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) जागरूकता सप्ताह 18 से 24 नवंबर तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर डीन डॉ. ए.के. पीठवा के मार्गदर्शन तथा माइक्रोबायोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. मुनेश कुमार शर्मा की देखरेख में इस दौरान विभिन्न जागरूकता गतिविधियाँ संपन्न हुईं। कार्यक्रम के अंतर्गत मेडिकल छात्रों द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी, जागरूकता रैली, और शपथ ग्रहण आयोजन किए गए, जिनका उद्देश्य एंटीबायोटिक के समुचित उपयोग के प्रति समाज और चिकित्सा विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाना था।

इस अवसर पर विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों ने एंटीबायोटिक के तर्कसंगत एवं जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। फार्माकोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. महेश जैन, पैथोलॉजी विभाग की प्रमुख डॉ. ममता गुप्ता तथा अन्य विशेषज्ञों ने बताया कि एंटीबायोटिक का गलत या अधिक प्रयोग सूक्ष्मजीवों में प्रतिरोध विकसित कर देता है, जिससे दवाओं का प्रभाव कम हो जाता है और उपचार जटिल हो सकता है।

विशेषज्ञों ने अपील की कि मरीज हमेशा डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाओं को निर्धारित अवधि

और सही मात्रा में ही लें, ताकि उपचार प्रभावी रहे और प्रतिरोध की समस्या न बढ़े। कार्यक्रम के दौरान यह भी समझाया गया कि एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) वह स्थिति है जिसमें बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवी दवाओं के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लेते हैं। इस जागरूकता सप्ताह का मुख्य उद्देश्य संक्रमण नियंत्रण की सर्वोत्तम पद्धतियों को अपनाने तथा एंटीबायोटिक उपयोग में विवेक को प्रोत्साहित करना रहा।

अस्पताल निदेशक डॉ.प्रशांत ने एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप की अवधारणा पर भी प्रकाश डाला, जो अस्पतालों और समुदाय में दवा उपयोग के सुव्यवस्थित एवं समन्वित प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अमलतास मेडिकल कॉलेज के चेयरमैन श्री मयंक राज सिंह भदौरिया जी द्वारा बताया गया की 'विश्व एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) जागरूकता सप्ताह का आयोजन अमलतास मेडिकल कॉलेज में हमारे शैक्षणिक दायित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रतीक है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध आज वैश्विक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर चुनौती है, और इसका समाधान जागरूकता, वैज्ञानिक समझ और जिम्मेदार चिकित्सा व्यवहार में निहित है। मुझे गर्व है कि हमारे विद्यार्थी, संकाय सदस्य और चिकित्सकीय विशेषज्ञ इस दिशा में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। मेरा संदेश है कि हम सभी मिलकर एंटीबायोटिक के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा दें और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित स्वास्थ्य व्यवस्था सुनिश्चित करें।'

यूनिटी मार्च भारत एकता यात्रा 26 नवंबर को धार जिले में प्रवेश करेगी

भाजपा जिला अध्यक्ष निलेश भारती ने कार्यक्रम स्थल का अवलोकन किया

धार। राष्ट्रीय एकता के प्रतीक, लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर देशभर में निकल रही यूथ यात्राओं की श्रृखला में यूनिटी मार्च नर्मदा प्रवाह भारत एकता यात्रा का 24 नवंबर को नागपुर (महाराष्ट्र) से प्रारंभ हो कर, 26 नवंबर को दोपहर 3 बजे 10 से अधिक बसों के साथ धार पहुंचेगी, जिसका भव्य स्वागत भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती के नेतृत्व धार के इंदौर- अहमदाबाद रोड़ फौजी ढाबे पर किया जाएगा।

सोमवार को भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने नगर पालिका अधिकारी विश्वनाथ सिंह व खेल विभाग के अधिकारी के साथ कार्यक्रम स्थल का अवलोकन किया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष विशाल निगम और जयराज देवड़ा भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, युवा मोर्चा जिला महामंत्री अंकित भावसार, यूनिटी मार्च

यात्रा सह प्रभारी जसप्रीत डंग , भाजपा नेता मनीष प्रधान, महेश रावला मौजूद रहे।

भाजपा जिला अध्यक्ष निलेश भारती ने बताया कि यूनिटी मार्च यात्रा, सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित एक राष्ट्रव्यापी जन अभियान है। सरदार पटेल का दृढ़ नेतृत्व, कूटनीतिक कौशल और राष्ट्रीय एकता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता आज भी पीढ़ियों को प्रेरित करती है, और 'यूनिटी मार्च यात्रा' उनकी अमर विरासत को समर्पित है। यह यात्रा सरदार पटेल के 'एकीकृत भारत' के दृष्टिकोण को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित और आत्मनिर्भर भारत' के मिशन से जोड़ते हुए, जनभागीदारी से एक सच्चा राष्ट्रीय अभियान बनाएगी। यात्रा का उद्देश्य–एकता, राष्ट्रभाव और सामाजिक समरसता–इन मूल्यों को मजबूत करते हुए अधिकतम जनभागीदारी सुनिश्चित करना है।

उत्तम प्रसाद खंडेलवाल जी की श्रद्धांजलि सभा आज, सेवा प्रकल्प का होगा शुभारंभ

बैतूल। समाजसेवी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व नगर संघचालक उत्तम प्रसाद खंडेलवाल का 14 नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे मुकेश खंडेलवाल के पिता और अभिषेक अग्रवाल के नाना थे। उनकी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आज मंगलवार 25 नवम्बर को राधा-कृष्ण धर्मशाला में शाम 4 बजे से किया गया है। इस अवसर पर उनकी स्मृति में एक सेवा प्रकल्प का शुभारंभ भी किया जाएगा। उत्तम प्रसाद खंडेलवाल समाजसेवा के क्षेत्र में अत्यंत सक्रिय रहे। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक जनसेवा प्रकल्पों का सफल संचालन

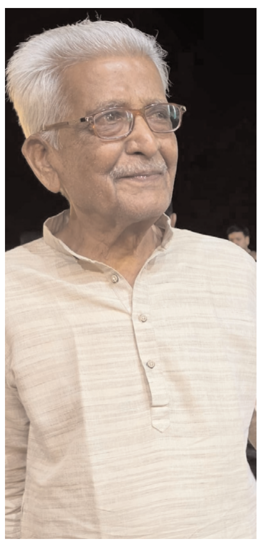

किया। विशेष रूप से बैतूल रेलवे स्टेशन पर भीषण गर्मी के दौरान 20 वर्षों तक ट्रेनों में सफर करने वाले राहगीरों को निशुल्क ठंडा पानी उपलब्ध कराना उनकी सेवा का अनूठा उदाहरण रहा, जिसने बैतूल की एक विशिष्ट पहचान बनाई। इसके अतिरिक्त जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों को लम्बे समय तक निन्शुल्क भोजन उपलब्ध करवाने सहित कई अन्य सामाजिक कार्यों का भी उन्होंने समर्पित भाव से संचालन किया। श्रद्धांजलि सभा में उनके सामाजिक योगदान को याद कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी।

एसडीएम-तहसीलदार मतदान केंद्रों एवं फील्ड पर जाकर कर रहे हैं एसआईआर प्रक्रिया का निरीक्षण

बीएलओ, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों से एसआईआर के संबंध में की जा रही है चर्चा, बीएलओ को दिया जा रहा है मार्गदर्शन

एसआईआर में गति लाने के लगाए जा रहे हैं कैंप

जिले में चरणबद्ध रूप से संचालित हो रही है एसआईआर प्रक्रिया

सीहोर (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची को अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाने के लिए मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया संचालित की जा रही है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार एसआईआर प्रक्रिया के प्रथम चरण में जिले के सभी बूथ लेवल अधिकारी घर-घर जाकर मतदाताओं से संपर्क कर रहे हैं और गणना पत्रक वितरित कर गणना पत्रक भरवाने का कार्य कर रहे हैं। एसआईआर प्रक्रिया में गति लाने के लिए सीहोर में अनेक स्थानों पर कैलेंडरवार कैंप भी लगाए जा रहे हैं, जहां बीएलओ की सहायता के लिए अधिकारियों-कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है, ताकि एसआईआर का काम जल्द से जल्द पूर्ण हो सके। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार एसआईआर के संबंध में जिले के सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं संबंधित अधिकारियों द्वारा अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केंद्रों एवं फील्ड पर जाकर एसआईआर प्रक्रिया का निरीक्षण किया जा रहा है और बीएलओ को मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

इसके साथ ही सभी अधिकारी मतदाताओं को इस एसआईआर प्रक्रिया के गणना पत्रक भरने तथा बीएलओ के पास जमा करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस दौरान सभी अधिकारी बूथ लेवल ऑफिसर्स (बीएलओ), बूथ लेवल एजेंटों एवं जनप्रतिनिधियों से चर्चा कर एसआईआर प्रक्रिया के सुचारू संचालन के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन भी दे रहे हैं, ताकि जिले में एसआईआर की प्रक्रिया सटीक और प्रभावी रूप से संचालित हो सके।

चरणबद्ध रूप से संचालित हो रही है एसआईआर प्रक्रिया

उल्लेखनीय है कि निर्वाचन आयोग द्वारा इस विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया को तीन चरणों में संचालित किया जा रहा है। प्रथम चरण में घर-घर जाकर गणना पत्रक भरने एवं सत्यापन का कार्य 4 नवम्बर से 4 दिसम्बर 2025 तक संचालित किया जा रहा है। इसके पश्चात 9 दिसम्बर 2025 को प्रारूप मतदाता सूची प्रकाशित की जाएगी, जिस पर 8 जनवरी 2026 तक दावे एवं आपत्तियाँ आमंत्रित की जाएंगी। सुनवाई एवं प्रमाणीकरण की प्रक्रिया 31 जनवरी 2026 तक पूर्ण की जाएगी तथा 7 फरवरी 2026 को अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित की जाएगी। इस एसआईआर प्रक्रिया का उद्देश्य जिले की मतदाता सूची को पूर्णत: शुद्ध, अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाना है ताकि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची से वंचित न रहे और कोई अपात्र नाम सूची में शामिल न हो।

आगामी नेशनल लोक अदालत के संबंध में बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र आर्य द्वारा जिले में 13 दिसम्बर को आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत के संबंध मे न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं, लीगल एड डिफेंस काउंसिल बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रधान जिला न्यायाधीश श्री प्रकाश चंद्र आर्य द्वारा आगामी नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण के सम्बंध में चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि सभी को लोक अदालत के माध्यम से प्रकरणों के निराकरण का विकल्प अपनाना चाहिए एवं पक्षकारों को लाभान्वित करना चाहिए। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह ने नेशनल लोक अदालत के बारे में विस्तार से जानकारी दी और अधिक से अधिक पक्षकारों तक इसका लाभ पहुंचाने का आह्वान किया7 इसके साथ ही बैठक में नेशनल लोक अदालत में विद्युत प्रकरणों एवं जलकर, सम्पत्तिकर के प्रकरणों में घोषित छूट के बारे में जानकारी देते हुए अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की गई।

संक्षिप्त समाचार

जिला स्टैंडिंग कमेटी की बैठक संपन्न

विदिशा (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी नगर पालिकाओं और पंचायतों की फोटो युक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2025 अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अंशुल गुप्ता की अध्यक्षता में राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ जिला स्टैंडिंग कमेटी की बैठक कलेक्ट्रेट में आयोजित की गई। इस बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री गुप्ता द्वारा राजनैतिक दलों को नगरीय क्षेत्र की अंतिम प्रकाशित मतदाता सूची निशुल्क प्रदाय की जाकर प्रकाशन के संबंध में संपूर्ण जानकारी दी गई।

कुरवाई विधानसभा क्षेत्र में विलगोना बना 100 प्रतिशत सर्वेक्षण पूर्ण करने वाला केंद्र

विदिशा (निप्र)। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर'26) के अंतर्गत तहसील पठारी के मतदान केंद्र विलगोना (मतदान केंद्र क्रमांक-194) में नियुक्त बूथ लेवल ऑफिसर श्री मनोज अहिरवार द्वारा सभी कार्य शत-प्रतिशत पूर्ण किए गए हैं।निर्वाचन कार्य की समयसीमा का पालन करते हुए मतदाता सूची से संबंधित सभी प्रविष्टियों का सत्यापन, नाम विलोपन, संशोधन एवं नवीन मतदाताओं का पंजीकरण कार्य पूरी जिम्मेदारी से संपादित किया गया।प्रशासन द्वारा श्री अहिरवार के इस अनुकरणीय कार्य की सराहना की जा रही है।

संयुक्त सचिव द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया गया

विदिशा (निप्र)। संयुक्त सचिव महिला एवं बाल विकास भारत सरकार श्री अजीत कुमार द्वारा आकांक्षी जिला विदिशा अंतर्गत आकांक्षी विकासखण्ड गंजबासौदा में ऑगनबाड़ी केन्द्र सनावल एवं गुलाबगंज तहसील के गूलरखेड़ी के आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया गया। संयुक्त सचिव श्री अजीत कुमार द्वारा निरीक्षण के दौरान आंगनबाड़ी में बच्चों से चर्चा की गई एवं आंगनबाड़ी में बच्चों एवं महिलाओं को प्रदाय की जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली गई। उसके पश्चात संयुक्त सचिव द्वारा पी.एम. केयर फॉर चिल्ड्रन योजना अंतर्गत पात्र दो हितग्राही बच्चों से चर्चा की एवं उनकी शिक्षा एवं भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर दोनों हितग्राहियों को जिला कार्यक्रम अधिकारी को राज्य स्तरीय कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण में सम्मिलित होने हेतु निर्देशित किया गया। इसके पश्चात संयुक्त सचिव द्वारा यशोदा एडॉपशन सेन्टर विदिशा का निरीक्षण किया एवं बच्चों को प्रदान की जाने वाली व्यवस्था की जानकारी ली गई। संयुक्त सचिव द्वारा बालिका संप्रेक्षण गृह विदिशा की अधीक्षिका श्रीमती आकांक्षा मरावी से संप्रेक्षण गृह की बालिकाओं एवं उनको दी जाने वाली व्यवस्थाओं के बारे में चर्चा की गई एवं विपदाग्रस्त महिलाओं के आश्रय गृह वन स्टॉप सेन्टर (सखी सेन्टर) का निरीक्षण कर प्रशासक श्रीमती कृतिका व्यास से महिलाओं को दी जाने वाली समस्त प्रकार की सहायताओं एवं सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात संयुक्त सचिव द्वारा बाल कल्याण समिति के अध्यक्षध्सदस्य एवं किशोर न्याय बोर्ड विदिशा के सदस्यों से चर्चा की गई। निरीक्षण के दौरान जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास श्रीमती विनीता लोढ़ा, सहायक संचालक श्री विवेक शर्मा, परियोजना अधिकारी श्री संजय सिंह एवं श्री वीपी सिंह उपस्थित रहे।

तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0 के तहत प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिले में कोटपा एक्ट के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए संचालित किए जा रहे 60 दिवसीय तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0 के तहत पुलिस अधीक्षक कार्यालय में एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला अध्यक्षता में एन्फोर्समेंट स्क्वाड के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में जिले के विभिन्न थाने से 50 पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस अभियान के तहत शिक्षण संस्थानों को तंबाकू मुक्त बनाने के लिए स्कूलों के 100 मीटर के दायरे में स्थापित तंबाकू दुकानों पर कार्रवाई की जाए, ताकि जिले के सभी शिक्षण संस्थानों को तंबाकू मुक्त बनाया जा सके।

तिरुपति बालाजी की चार दिवसीय यात्रा धूमधाम और भक्तिभाव के साथ हुई संपन्न

भोपाल। साहू समाज भोपाल द्वारा आयोजित 124 श्रद्धालुओं का भव्य जत्था तिरुपति बालाजी की चार दिवसीय धर्मयात्रा पूरी कर हर्षोल्लास के साथ भोपाल लौट आया। यह यात्रा समाज में धार्मिक जागरूकता और एकजुटता का सुंदर उदाहरण बनी।

2001 से निरंतर सेवा-बालाजी मार्बल परिवार का अनोखा संकल्प-यात्रा के संस्थापक एवं साहू समाज भोपाल के कार्यकारिणी सदस्य संजय साहू (बालाजी मार्बल) एवं अनीता साहू ने बताया कि उनका परिवार वर्ष 2001 से हर वर्ष लगभग 100 से अधिक श्रद्धालुओं को अपने निजी खर्च पर तिरुपति बालाजी के दर्शन कराता आ रहा है। उनके द्वारा ट्रेन यात्रा, भोजन-नाश्ता, दर्शन टिकट, वेल्लोर स्थित लक्ष्मी माता मंदिर के दर्शन सहित सभी व्यवस्थाएँ की जाती हैं। उन्होंने कहा, समाज की सेवा करना हमारे परिवार का सौभाग्य है। ईश्वर की कृपा से यह परंपरा आगे भी जारी रहेगी।

यात्रा संचालन में डॉ. अदिति साहू की महत्वपूर्ण भूमिका-यात्रा का सफल संचालन कर रही डॉ. अदिति साहू ने बताया कि समाज के धार्मिक बंधुओं की सेवा करना उनके लिए अत्यंत गर्व और सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि तिरुपति बालाजी की कृपा से समाज जन इस यात्रा में उत्साहपूर्वक जुड़ते हैं और हर वर्ष बड़ी संख्या में धार्मिक यात्रा करने वालों की संख्या बढ़ती जा रहे हैं।

व्यापारी वर्ग के लिए विशेष अनुभव-भोपाल किराना व्यापारी महासंघ के महामंत्री विवेक साहू एवं प्रीतम साहू ने कहा कि व्यापारिक व्यस्तताओं के कारण धार्मिक यात्रा का समय निकालना कठिन होता है, लेकिन संजय साहू के सानिध्य में परिवार सहित तिरुपति दर्शन का अवसर मिलना उनके लिए अविस्मरणीय रहा और इस बार 124 की संख्या में श्रद्धालु गए थे जो धार्मिक यात्रा से वापस आकर एक सूत्री माला की तरह परिवार के रूप में एकजुटता के साथ वापस आए जो हमारे लिए सबसे अधिक स्मरणीय पल है।

समूह यात्रा का अनोखा आनंद-साहू समाज भोपाल के उप महामंत्री मुकेश साहू 'मिर्ची' एवं उत्सव मंत्री पिंटू साहू ने कहा कि वे 11 बार तिरुपति जा चुके हैं, परंतु 124 सदस्यों के विशाल जत्थे के साथ किए गए दर्शन का आनंद अद्वितीय और अविस्मरणीय रहा।

यात्रा में शामिल मित्र मुकेश गुप्ता,सतीश नंदा एवं राकेश जैन ने बताया कि पूरे सफर के दौरान भोजन-नाश्ता, भजन-कीर्तन और नृत्य ने यात्रा को और अधिक आनंदमयी बना दिया। उन्होंने कहा कि यह अनुभव जीवनभर स्मरण रहेगा।

स्वच्छ वातावरण यात्रा को सुखद बना दिया-साहू समाज संयोजक सुरेंद्र साहू एवं नवयुग मंडल महामंत्री रोहित साहू ने कहां की पूरी यात्रा में आपसी भाईचारा और सहयोग एवं स्वच्छ वातावरण ने इसे और यादगार बना दिया। तिरुपति बालाजी की कृपा से सब कुछ अत्यंत सुखद रहा।

ट्रेन में यात्रा कर रही महिलाओं का भजन-कीर्तन-यात्रा के दौरान महिलाओं ने ट्रेन में ही भक्ति से भरपूर जागरण का आयोजन किया, जिसमें नागपुर के विख्यात भजन गायक राज पवार एवं उनकी टीम ने भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति दी। महिलाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता और भजन मंडली के सुरीले भजनों ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक आनंद और ऊर्जा से महका दिया, ट्रैन मे मौजूद अन्य यात्री भी इस ऐतिहासिक पल का हिस्सा बने। यह जागरण यात्रा का सबसे विशेष और यादगार पल रहा।

यात्रा में हंसी-खुशी का रंग-यात्रा के दौरान समाज के रंगकर्मी सोनू साहू और मुकेश साहू पटवा ने अपनी अदाकारी और हास्यपूर्ण प्रस्तुतियों से सभी श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। उनकी छेड़छाड़, नाटकीय अभिनय और विनोदपूर्ण प्रस्तुतियों ने यात्रा के दौरान माहौल को अत्यंत जीवंत और आनंदमय बना दिया। श्रद्धालु उनके प्रदर्शन पर खूब हंसे और यात्रा के यह पल लंबे समय तक यादगार बने रहेंगे।

वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति-यात्रा में समाज के वरिष्ठ सदस्य भी उपस्थित रहे, जिन्होंने अनुभव और आशीर्वाद से यात्रा को और विशेष बना दिया। इसमें शिव प्रसाद साहू, संतोष साहू लखपति, कैलाश साहू, नर्मदा प्रसाद साहू, बाबूलाल साहू, मांगीलाल साहू,जीतेन्द्र साहू, दिनेश साहू,राकेश साहू, राजीव साहू (डब्बू) राजकुमार साहू, महेश साहू, मनोज साहू, सुरेश साहू विजय साहू, पुरुषोत्तम साहू, घनश्याम ताम्रकार शामिल थे।उनकी उपस्थिति ने सभी श्रद्धालुओं के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा का काम किया।

यात्रा में युवाओं का उत्साह-तिरुपति धार्मिक तिरुपति धार्मिक यात्रा में युवाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया और पूरे जत्थे में जोश और ऊर्जा का संचार किया। दीपक साहू,जीतेन्द्र साहू,दीपेश साहू, पवन साहू, विनोद साहू,अभिषेक साहू, विकास साहू, वैभव साहू, आर्यन साहू, धर्मेंद्र साहू, संजय साहू, सतीश साहू और श्रीयंत गुप्ता सहित अन्य सभी युवा साहू शामिल थे। उनकी भागीदारी ने यात्रा के माहौल को और भी जीवंत, उत्साही और यादगार बना दिया।

सभी श्रद्धालुओं ने व्यक्त किया आभार-यात्रा में सम्मिलित सभी पुरुष वर्ग,मातृशक्तिके साथ साथ युवा श्रद्धालुओं ने संजय साहू व बालाजी मार्बल परिवार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि यह दिव्य यात्रा आने वाले वर्षों में भी निरंतर होती रहे और समाज को जोड़ने का कार्य इसी प्रकार चलता

समन्वित प्रयासों और सहयोग से बैतूल मॉडल नगर बनेगा : विधायक श्री हेमन्त खंडेलवाल

केंद्रीय मंत्री श्री उईके और विधायक श्री खंडेलवाल ने टिकारी - गाड़ाघाट मार्ग का किया भूमिपूजन

बैतूल (निप्र)। केंद्रीय मंत्री जनजातीय मामले श्री दुर्गादास उईके और प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल श्री हेमन्त खंडेलवाल ने शनिवार को 7 करोड़ 90 लाख की लागत से बनने वाले 2.70 किलोमीटर लंबे सड़क टिकारी- गाड़ाघाट मार्ग (बैतूल स्टेशन मार्ग) का भूमिपूजन किया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री महेश राठौर, उपाध्यक्ष जिला पंचायत श्री हंसराज धुर्वे, श्री सुधाकर पवार, श्री आनंद प्रजापति, श्री महेंद्र सिंह चौहान, श्रीमती रजनी राजेश वर्मा, श्री सतीश मालवीय, श्री विक्रम वैध, श्री विकास मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा कार्यपालन यंत्री पीडब्ल्यूडी श्रीमती प्रीति पटेल सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहें। केंद्रीय मंत्री श्री उईके ने कहा कि विधायक श्री खंडेलवाल के प्रयासों से बहुप्रतीक्षित मांग आज पूरी हो रही हैं। जिस मार्ग का बजट पहले लगभग 2 करोड़ था उसे विधायक जी ने अपने प्रयासों से बढ़ाकर लगभग 8 करोड़ किया है। लगातार बैतूल विकास की दृष्टि से सर्वाधिक विकसित जिला बढ़ने की और आगे बढ़ रहा हैं। आज भारत वर्ष 2047 तक सर्वाधिक विकसित, संपन्न राष्ट्र बनने की ओर गतिशील है। इस उपलब्धि के वार्डवासियों को बधाई देता हूं। विकास की गंगा जिले में इसी प्रकार प्रवाहित होती रहेगी। विधायक श्री खंडेलवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षेत्र की इस सड़क की मांग लंबे समय से की जा रही थी। सड़क अत्यंत क्षतिग्रस्त हो चुकी थी। लगभग एक वर्ष पूर्व इस सड़क की स्वीकृति मिल चुकी थी, परंतु पहले इसकी स्वीकृति गाड़ाघाट से हनुमान मंदिर तक ही थी। लेकिन नगर कारगिल चौक से यह पूरा मार्ग सबसे व्यवस्त मार्ग हैं। जिसके लिए अब मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और लोक निर्माण विभाग मंत्री द्वारा कारगिल चौक से गाड़ाघाट तक इस सड़क निर्माण के लिए 7.90 करोड़ की बजट स्वीकृत किया गया है। स्थायी सड़क निर्माण के लिए बड़ी राशि स्वीकृत की गई है। उन्होंने कहा कि विगत कुछ महीनों में इस मार्ग पर से अतिक्रमण भी चिन्हित कर हटाए गए हैं। मैं सभी नागरिकों से अपील करता हूँ कि यदि स्वेच्छा से अपने अतिक्रमण हटा लें, तो सबसे अधिक सुविधा स्वयं उन्हें ही मिलेगी। आने वाले समय में वार्डों की सड़कों पर भी इसी तरह स्वेच्छा से अतिक्रमण हटाने का सहयोग मिले, ताकि नालियों को भी पर्याप्त जगह मिल सके। ताकि सड़क व्यवस्थित और पर्याप्त चौड़ी हो। पथ विक्रेताओं के लिए भी रोजी रोटी का संकट निर्मित न हो इसके लिए अस्थाई और स्थायी दोनों व्यवस्थाएं इस प्रकार बनाई जा रही हैं कि किसी की जीवन-व्यवस्था प्रभावित न हो। शहर सुव्यवस्थित दिखे और किसी की रोजी रोटी भी प्रभावित न हो इसके लिए सभी के समन्वित प्रयास और सहयोग की आवश्यकता हैं। चौपाटी निर्माण के लिए भी एक करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। सभी के सहयोग से बैतूल एक मॉडल शहर के रूप में विकसित होगा। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। कालापाठा से चक्कर रोड की गुणवत्ता की प्रशंसा सभी ने की है, और इसी प्रकार सदर व बडोरा रोड के निर्माण की भी प्लानिंग जारी है।

जल संचय अभियान: जल संरक्षण को बढ़ावा देने ग्राम बाचा में ग्रामीणों ने किया बोरी बंधान

बैतूल (निप्र)। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद घोड़ाडोंगरी ने शनिवार को ग्राम बाचा में जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 125 बोरियों का बोरी बंधान निर्माण कार्य संपादित किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य जल स्रोतों के संरक्षण, भू-जल स्तर के संवर्धन एवं जनसहभागिता से स्थानीय जल प्रबंधन को सुदृढ़ करना रहा।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष व राज्यमंत्री दर्जा श्री मोहन नागर ने शिरकत की।

इस अवसर पर श्री नागर ने जल संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 'जल संचय अभियान' संपूर्ण मध्य प्रदेश में जन अभियान परिषद द्वारा व्यापक स्तर पर संचालित किया जा रहा है, जिसमें जनभागीदारी निरंतर बढ़ रही है। उपाध्यक्ष श्री नागर ने कहा कि जिले में यह अभियान 30 दिसंबर 2025 तक निरंतर रूप से जारी रहेगा, जिसके अंतर्गत विभिन्न ग्रामों में छोटे-छोटे बोरी बंधान एवं स्टॉप-डैम का निर्माण किया जाएगा, जिससे जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यक्रम के अंत में श्री अनिल द्वारा सभी अतिथियों, नवांकुर संस्थाओं एवं ग्रामीणजनों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य श्री राजेंद्र कवडे, प्रमुख, ग्राम पर्यटन समिति श्री अनिल उइके, नवांकुर संस्था एकता ग्रामीण जन सहयोग श्री श्याम बेलवंशी, बज्जरवाड़ा से श्री पवन परते, श्री संजय यादव, खदारा से श्री संजय धुर्वे जी, जन अभियान परिषद से विकासखंड समन्वयक घोड़ाडोंगरी श्री संतोष सिंह राजपूत तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन शामिल रहे और उन्होंने बोरी बंधान निर्माण में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर मांडवी से आठनेर तक भव्य यूनिटी मार्च का आयोजन

केंद्रीय मंत्री श्री उईके और प्रदेश अध्यक्ष श्री खंडेलवाल यूनिटी मार्च में हुए शामिल

बैतूल (निप्र)। मेरा युवा भारत बैतूल युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की 150वीं जन्म जयंती के अवसर पर देशभर में आयोजित किए जा रहे यूनिटी मार्च श्रृंखला के तहत शनिवार को जनपद आठनेर के ग्राम मांडवी स्थित गणेश कॉलेज से भव्य एकता पदयात्रा निकाली गई। लगभग 8 किलोमीटर लंबी यह यूनिटी मार्च पुलिस ग्राउंड, आठनेर में समारोहपूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री श्री दुर्गादास उईके तथा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री हेमन्त खंडेलवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। 'सरदार पटेल अमर रहें', 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम' जैसे जोशीले नारों के साथ स्कूली विद्यार्थियों, सामाजिक संगठनों और बड़ी संख्या में नागरिकों ने उत्साहपूर्वक मार्च में भाग लिया। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक श्री हेमन्त खंडेलवाल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की 150वीं जयंती पर प्रदेशभर में एकता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से यूनिटी मार्च का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद 500 से अधिक रियासतों का एकीकरण सरदार पटेल की अद्भुत सूझबूझ और राष्ट्रनिष्ठा का अप्रतिम उदाहरण है। महात्मा गांधी के 'एक भारत' के स्वप्न को साकार करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। उन्होंने युवा पीढ़ी से आह्वान किया कि वे लौह पुरुष के जीवन मूल्यों और राष्ट्रनिष्ठ आदर्शों का अनुसरण कर भारत को सशक्त और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ाएं। उन्होंने बताया कि नागपुर से आरंभ हुई भव्य यूनिटी यात्रा सोमवार को बैतूल पहुंचने वाली है, जिसका जिले में ऐतिहासिक स्वागत किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि बैतूल रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा और अधोसंरचना के क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है। केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उईके ने सरदार पटेल की जयंती पर सभी नागरिकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लौह पुरुष के असाधारण व्यक्तित्व और राष्ट्रनिर्माण के प्रति उनके समर्पण से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी देश के संरक्षक के रूप में आगे आए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सरदार पटेल ने विखंडित भारत को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक और असंभव-सा लगने वाला कार्य पूरा किया।

अलविदा धर्मेंद्र

हेमंत पाल
(सुबह सवेरे के स्थानीय संपादक, इंदौर)

ऐसा 'ही-मैन' जिसने रोमांस भी किया और गुदगुदाया भी

धर्मेंद्र जैसे अभिनेता का जाना फिल्मों के एक ऐसे युग का अंत माना जाएगा, जिसमें दिलीप कुमार, राजेंद्र कुमार और राजकुमार जैसे अभिनेता हुए। धर्मेंद्र ने उसी दौर में अपनी अभिनय यात्रा शुरू की थी। लेकिन, वे कभी टाइप्ड नहीं हुए। कभी किसी एक छवि में नहीं ढले। एक्शन, रोमांस और कॉमेडी जैसे किरदारों में उन्होंने सशक्त पहचान बनाई और 'ही मैन' का ऐसा ख़िताब पाया जो किसी को कभी नहीं मिला और शायद कभी मिलेगा भी नहीं!

अब इस खबर की सच्चाई में कोई शक नहीं रहा। विख्यात फिल्म अभिनेता धर्मेंद्र का आज सुबह निधन हो गया। सीधे शब्दों में कहा जा सकता है कि बॉलीवुड के 'ही-मैन' अब दुनिया से विदा हो गए। 89 साल की उम्र में धर्मेंद्र ने अपने जुहू स्थति घर पर ही अंतिम सांस ली है। यदि वे 14 दिन और रहते, तो 90 साल के हो जाते। लंबे समय से उनकी तबीयत नाजुक थी। इस बीच 11 नवंबर को उनके निधन की अफवाह भी उड़ी, जिसके बाद 12 नवंबर को उन्हें ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल से परिवार के कहने पर डिस्चार्ज कर घर भेज दिया गया था। घर पर ही उनका इलाज चल रहा था। इस अभिनेता का जाना, सिनेमा के एक युग के ख़त्म हो जाने जैसी घटना है। दुखद बात यह कि सोमवार को ही उनकी अगली फिल्म 'इक्कीस' का मोशन पोस्टर रिलीज हुआ। इलाज की तमाम कोशिशों के बाद भी धर्मेंद्र उम्र और बीमारी के आगे जिंदगी की जंग हार गए।

वे ऐसे अभिनेता थम जिन्हें उनकी कई भूमिकाओं के लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हें ही-मैन जरूर कहा जाता था, पर वे एक्शन के साथ कॉमेडी के रोल में भी खूब पसंद किए गए और 'सत्यवान' जैसी फिल्म में उन्होंने आदर्श पुरुष की सशक्त भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में उनका किरदार ईमानदार, नैतिक और संघर्षरत व्यक्ति का था। 'बंदिनी' में वे संवेदनशील डॉक्टर बने, तो 'चुपके-चुपके' में प्रो परिमल त्रिपाठी के रोल में कॉमेडी से दर्शकों को गुदगुदाया। 'शोले' के वीरू को भी दर्शक कभी भुला नहीं सकेंगे। धर्मेंद्र के करियर की विशिष्ट भूमिकाएं उनकी बहुमुखी प्रतिभा, नायकत्व और संवाद अदायगी के लिए जानी जाती हैं। इस कलाकार के फिल्मी सफर की शुरुआत 1960 में अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म 'दिल भी तेरा हम भी तेरे' से हुई थी। शुरू में उन्हें साधारण भूमिकाएं मिलीं, लेकिन जल्दी ही उनके अभिनय और व्यक्तित्व ने दर्शकों को आकर्षित करना शुरू कर दिया।

उनका फिल्म करियर छह दशकों से अधिक समय तक चला और उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया। 'शोले' (1975) में वीरू के किरदार ने उन्हें सबसे बड़ी पहचान दी। लेकिन, वे सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहे। सत्यकाम, चुपके-चुपके, मेरा गाँव मेरा देश, धरमवीर, सीता और गीता, द बर्निंग ट्रेन, हुकूमत, प्रतिज्ञा, नौकर बीवी का जैसी फिल्मों के लिए भी उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा।1966 में आई 'फूल और पत्थर' से धर्मेंद्र को जबरदस्त लोकप्रियता मिली। इसके बाद वे 'एक्शन हीरो' के रूप में पहचान गए। को खासी पहचान मिली। बाद के सालों में उन्होंने

चरित्र प्रधान भूमिकाएं भी की। उनकी छवि रोमांटिक हीरो और संवेदनशील भूमिकाओं में भी पसंद की गई। अनुपमा, बंदिनी और 'हकीकत' जैसी फिल्मों में उनके अभिनय में मासूमियत, सहजता और कोमलता प्रमुख रही।

उन्होंने हर भूमिका में अपने अभिनय का जादू दिखाया और अभिनय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। एक्शन, रोमांस और कॉमेडी की हर भूमिका में उनका अभिनय बेजोड़ रहा, जिसने दर्शकों को बांधकर रखा। फूल और पत्थर, मेरा गांव मेरा देश जैसी फिल्मों में वे साहसी नायक के किरदार में दिखाई दिए तो चुपके चुपके, प्रतिज्ञा में दर्शकों को खूब गुदगुदाया। 'शोले' में वे दिलफेंक वीरू बने तो 'अनुपमा' जैसी गंभीर फिल्म में लेखक बनकर उन्होंने अपने अभिनय की गहराई को साबित किया। 'लोफर' जैसी फिल्म में रोमांटिक और कॉमिक किरदार को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। धर्मेंद्र सिनेमा के ऐसे कलाकार रहे, जिन्होंने अपने चाहने वालों के दिलों पर हमेशा गहरी छाप छोड़ी। उनके अभिनय की विरासत फिल्म इंडस्ट्री में अमिट रहेगी। उनके किरदार सिनेमा की सबसे प्रतिष्ठित भूमिकाओं में गिने जाते हैं।

उन्होंने अगली पीढ़ी के साथ भी अभिनय का तारतम्य बैठाया और चरित्र प्रधान भूमिका निभाई। 'अपने' और 'यमला पगला दीवाना' जैसी फिल्मों में वे अपने दोनों बेटों के साथ दिखाई दिए। धर्मेन्द्र का अभिनय बदलते सामाजिक और फिल्मी चलन के मुताबिक ढलता रहा। पारिवारिक किरदारों में उनकी सादगी और गहराई दर्शकों के दिलों में आज भी ताजा है। उनके अनोखे किरदारों में आत्मविश्वास, ऊर्जा और 'ही-मैन' वाली मर्दानगी छवि हमेशा दिखाई दी। 1997 में फिल्मफेयर का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड के साथ, हिंदी सिनेमा में योगदान के लिए उन्हें कई बार नवाजा गया। समय के साथ हर दौर में उन्होंने फिल्मों में सक्रियता बनाए रखी। चरस, शोले, राजपूत, कातिलों के कातिल और 'समाधी' जैसी फ़िल्में इसका जीवंत प्रमाण है। उनकी एक्टिंग में सहजता और दर्शकों से जुड़ने की क्षमता हमेशा कायम रही। उनकी अभिनय शैली में समय के साथ गहरी परिपक्वता और विविधता भी दर्शकों ने देखी। अब वे दुनिया से विदा हो गए, तो ऐसे में उनके परदे पर निभाए ये किरदार ही उनको याद करने का बहाना होंगे।

मंडीदीप से भोपाल तक 14 किमी का जाम

6 साल की बच्ची से रेप के विरोध में तीसरे दिन भी प्रदर्शन ; पुलिस ने किया लाठीचार्ज

मंडीदीप (रायसेन) (नप्र)। रायसेन जिले के मंडीदीप में 6 साल की बच्ची से दुष्कर्म के विरोध में सोमवार को भी भारी प्रदर्शन हुआ। दोपहर 12 बजे से 3.30 बजे तक मंडीदीप से भोपाल की ओर 14 किमी और औबेदुल्लागंज की ओर 7 किमी लंबा जाम लगा रहा। हजारों वाहन कई घंटों तक वहां फंसे रहे।

प्रदर्शन कारियों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने दोपहर करीब 3 बजे हल्का बल का प्रयोग भी किया। इसके बाद सकल हिंदू समाज के प्रतिनिधियों ने एएसपी कमलेश कुमार खरपूसे को ज्ञापन सौंपा। इसके बाद उन्होंने आरोपी की गिरफ्तारी के लिए दो दिन का समय मांगा।

इसी मांग और आश्वासन के बाद लोगों ने चक्काजाम खत्म किया। इधर, मंगल बाजार क्षेत्र में विद्यार्थी परिषद ने भी जाम लगाया। यहां स्कूली बच्चों ने सड़क पर बैठकर न्याय की मांग की। स्थिति संभालने में पुलिस के 50-60 जवान जुटे रहे।

चॉकलेट दिलाने के बहाने ले गया था आरोपी- बता दें कि 21 नवंबर की शाम 6 साल की बच्ची घर के बाहर खेल रही थी। उसी दौरान 23 वर्षीय

आरोपी सलमान उसे चॉकलेट दिलाने के बहाने जंगल की ओर ले गया और दुष्कर्म कर भाग गया। बच्ची रोती हुई जंगल में मिली। उसे भोपाल अस्पताल में भर्ती किया गया है, जहां उसकी हालत में सुधार है। आरोपी पर 10 हजार रुपए का इनाम घोषित है, लेकिन 85 घंटे बाद भी पुलिस गिरफ्त में नहीं आ सका है।

तीसरे दिन भी शहर बंद, कई स्थानों पर प्रदर्शन- औबेदुल्लागंज में रविवार को युवा सौरभ मालवीय और साथियों ने दिनभर अनशन किया था। सोमवार को चिकलोद, गौहरगंज, औबेदुल्लागंज, मंडीदीप और रायसेन सहित कई जगह लोग सड़क पर उतरे। सराकिया में भी प्रदर्शन की तैयारी थी, लेकिन प्रशासन की समझाइश के बाद लोग माने।

पुलिस ने भीड़ को हटाने किया हल्का बल प्रयोग

दोपहर करीब 3 बजे भीड़ नहीं हटने पर पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। कुछ लोगों को लाठियों से हटाया गया, लेकिन थोड़ी देर बाद वे फिर सड़क पर बैठ गए। मौके पर फायर ब्रिगेड भी मौजूद रही। एएसपी,एसटीएम तहसीलदार और पांच थानों का पुलिस बल ट्रैफिक बहाल करने में जुटा रहा।

3.30 बजे के बाद खुलना शुरू हुआ जाम

एएसपी के दो दिन में गिरफ्तारी के आश्वासन के बाद प्रदर्शनकारियों ने रास्ता छोड़ा। 3.30 बजे जाम खोलने का काम शुरू हुआ, जिसके बाद दोनों ओर से गाड़ियों को धीरे-धीरे निकाला गया। ट्रैफिक को सामान्य होने में करीब 1.5 से 2 घंटे लगे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह बच्ची से मिलने पहुंचे

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल अस्पताल पहुंचकर बच्ची का हाल जाना। उन्होंने परिजनों को न्याय का भरोसा दिलाते हुए कहा कि आरोपी को जल्द पकड़ा जाएगा और केस फास्ट-ट्रैक कोर्ट में चलेगा।

मनचले की सरेआम जमकर धुनाई

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के नागदा में नाबालिग लड़की को परेशान करने के मामले में महिलाओं ने आरोपी की जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद मौके पर मौजूद भीड़ ने भी आरोपी को पीटा, जिससे वह लहूलुहान हो गया। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। जिसमें दो महिलाएं अधेड़ उम्र के आरोपी को चप्पलों से पीटते हुए दिखाई दे रही हैं।

नागदा थाना क्षेत्र की श्री राम कॉलोनी निवासी 16 वर्षीय किशोरी को बिड़लाग्राम निवासी सुंदरलाल नाम का अधेड़ कई दिनों से परेशान कर रहा था। परिजनों के अनुसार आरोपी आए दिन नशे में लड़की के घर के बाहर आकर हंगामा करता था और हरकतें करता था। कल रात भी आरोपी सुंदरलाल शराब के नशे में लड़की के घर के बाहर शोर मचा रहा था। इससे तंग आकर पीड़िता की मां और मौसी ने मिलकर आरोपी की धुनाई शुरू कर दी। साथ ही मोहल्ले में मौजूद लोग भी गुस्से में आ गए और भीड़ ने भी हाथ साफ किया।

एमपी में 2 सिस्टम का असर...

कई जिलों में बादल, ठंड-कोहरे के बीच मौसम बदला

भोपाल में रात में धुंध, रीवा-सतना में कोहरा

भोपाल (नप्र)। कड़ाके की ठंड के बीच मध्यप्रदेश में मौसम ने फिर करवट बदली है। प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में बादल छाए रहे। भोपाल में भी दिन में ठंडक रही। मौसम विभाग की माने तो अगले 5 दिन तक प्रदेश में शीतलहर का अलर्ट तो नहीं है, लेकिन वेस्टर्न डिस्टरबेंस (चक्रवात) और लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र) की वजह से दक्षिणी हिस्से में बादल छाए रह सकते हैं। यदि सिस्टम ज्यादा प्रभावी रहा तो बूंदाबांदी भी हो सकती है।

इससे पहले शनिवार-रविवार की रात में कई शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे रहा। भोपाल में ठंड का दौर बरकरार है और तापमान 9.4 डिग्री रहा। इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी की रात सबसे ठंडी रही। यहां तापमान 5.6 डिग्री दर्ज किया गया। छतरपुर के नौगांव में 8.2 डिग्री, नरसिंहपुर-मंदसौर में 8.6 डिग्री, शाजापुर में 8.8 डिग्री और राजगढ़ में 9 डिग्री रहा।

बड़े शहरों में इंदौर में 11.7 डिग्री, ग्वालियर में 12.1 डिग्री, उज्जैन में 12.5 डिग्री और जबलपुर में तापमान 12.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शाजापुर, रीवा, सतना और नर्मदापुरम में विजिबिलिटी 500 से 1 हजार मीटर दर्ज की गई। भोपाल में रात 10 बजे के बाद धुंध का असर शुरू हो जाता है। सुबह 1 हजार मीटर तक विजिबिलिटी दर्ज की जा रही है।

अगले 5 दिन ऐसा रहेगा मौसम- मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया, प्रदेश के दक्षिणी हिस्से के कुछ जिलों में हल्के बादल छाए रहे, लेकिन अगले 5 दिन यानी, 28 नवंबर तक मौसम साफ रहेगा। फिलहाल बारिश होने का अनुमान नहीं है। दूसरी ओर, रात के पारे में 1 से 2 डिग्री तक की बढ़ोतरी हो सकती है। सुबह और रात में ठंड का असर तेज रहेगा। इसलिए ठंड से बचने की एडवाइजरी जारी की गई है।

सुबह कोहरे का अलर्ट, इसलिए गाड़ी संभलकर चलाने की सलाह

कोहरे की वजह से एक्सपर्ट ने लोगों को सुरक्षित ड्राइविंग करने की सलाह दी है। मौसम विभाग ने हेल्थ और फसलों को लेकर एडवाइजरी भी जारी की है।

ट्रैफिक – कोहरा होने पर गाड़ी चलाते समय या किसी ट्रांसपोर्ट के जरिए ट्रैवल करते समय सावधान रखें। ड्राइविंग धीरे करें और फॉग लाइट का इस्तेमाल करें।

हेल्थ- तेज ठंड होने पर शरीर की गर्माहट बनाए रखने के लिए सिर, गर्दन, हाथ-पैर की उंगलियों को अच्छे से ढंके। फ्लू, सर्दी, खांसी-जुकाम होने पर डॉक्टर को दिखाए। विटामिन सी से भरपूर फल और सब्जियां खाएं।

कृषि- जहां मिट्टी में पर्याप्त नमी हो, वहां गेहूं, चना, सरसों-मटर की बुआई करें। जहां बुआई हो चुकी है, वहां जरूरत पड़ने पर कृषि वैज्ञानिकों से सलाह लें। पिछली फसलों के अवशेष यानी, ठूंठ को कभी न जलाएं।

सवर्णों की बेटियों पर अजाक्स के प्रांताध्यक्ष का विवादास्पद बयान

सभा में कहा- मेरे बेटे को ब्राह्मण बेटी दान में मिलने तक आरक्षण जारी रहे, विरोध शुरू

भोपाल (नप्र)। अजाक्स संगठन के जिस कार्यक्रम में रविवार को सीनियर आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा को संगठन का प्रांताध्यक्ष चुना गया उसमें संतोष वर्मा द्वारा दिए गए बयान को लेकर बवाल शुरू हो गया है।

वर्मा ने इस सभा में कहा कि जब तक मेरे बेटे को कोई ब्राह्मण अपनी बेटी दान नहीं देता या उससे संबंध नहीं बनता तब तक आरक्षण जारी रहना चाहिए। मंत्रालय सेवा अधिकारी, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक ने इसका विरोध करते हुए कहा है कि यह घोर आपत्तिजनक है और समूचे सवर्ण समुदाय का अपमान है। इसके चलते वे वर्मा के खिलाफ आईएएस आचरण नियमों के अंतर्गत वैधानिक कार्रवाई की मांग करते हैं।

इंजीनियर सुधीर नायक ने वीडियो जारी कर कहा है कि 23 नवंबर 2025 को सेकंड स्टाप, तुलसीनगर स्थित अंबेडकर मैदान में अजाक्स संगठन का प्रांतीय अधिवेशन था। उस कार्यक्रम में अजाक्स के नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष और वरिष्ठ आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा ने कहा कि जब तक मेरे बेटे को कोई ब्राह्मण अपनी बेटी दान नहीं देता या उससे संबंध नहीं बनता, तब तक आरक्षण जारी रहना चाहिए।

अजाक्स प्रांताध्यक्ष का यह बयान घोर आपत्तिजनक है और समूचे सवर्ण समुदाय का अपमान है। शादी विवाह निजी जिंदगी है। हर वयस्क व्यक्ति अपनी शादी के लिए स्वतंत्र है। कौन किससे शादी करे, यह उसका निजी मामला है और फिर बेटी कोई वस्तु नहीं है जो दान की जाए। कानूनी तौर पर तो मां बाप भी अपने पुत्र पुत्री की शादी किससे हो-यह तय नहीं कर सकते।

शादी का आरक्षण से क्या संबंध- नायक ने कहा कि सवर्ण समाज की बेटियों के बारे में एक

वरिष्ठ आईएएस अधिकारी द्वारा ऐसा कहा जाना अति निंदनीय है। शादी एक नितांत निजी मामला है, उसका आरक्षण से क्या संबंध है? वैसे भी समाज बहुत बदल चुका है। बड़ी संख्या में अंतर्जातीय विवाह हो रहे हैं। आरक्षित और अनारक्षित वर्गों के बीच भी बहुत शादियां हो रही हैं। मेरी जान पहचान में ही ऐसे कई दंपत्ति हैं। दलित नेताओं की शादियां ब्राह्मण युवतियों से हुई हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सविता अंबेडकर से शादी की थी जो कि ब्राह्मण थीं। रामविलास पासवान ने रीना शर्मा से शादी की थी। इससे यह भी जाहिर होता है कि इनके पास आरक्षण के पक्ष में अब कोई ठोस तर्क नहीं बचा है। इसलिए ऐसी अनर्गल बातें की जा रही हैं।

ऐसा प्रांतीय अध्यक्ष नहीं होना चाहिए- नायक ने कहा कि संतोष वर्मा के पहले भी अजाक्स संगठन के अनेक प्रांताध्यक्ष रहे उन्होंने आरक्षण के पक्ष में तमाम बातें कहीं लेकिन सवर्ण समाज की बहन- बेटियों के बारे में इस तरह की बातें कभी नहीं कहीं। अजाक्स एक कर्मचारी संगठन है। कर्मचारी संगठन के अधिवेशन में सर्विस मैटर्स पर बात होनी चाहिए न कि शादी विवाह जैसे निजी जीवन के विषयों पर होनी चाहिए। इस तरह संतोष वर्मा दोनों वर्गों के बीच खाई गहरी कर रहे हैं जो कि देश समाज के हित में नहीं है।

सवर्ण समाज की बेटियों के बारे में संतोष वर्मा द्वारा कहे गए इस वक्तव्य की वे निंदा करते हैं और आईएएस आचरण नियमों के अंतर्गत समुचित कार्रवाई किए जाने की सरकार से मांग करते हैं। नायक ने कहा कि अजाक्स संगठन से जुड़े भाई बहनों से भी अपील है कि इस तरह की बातें करने वाले को उनका प्रांतीय अध्यक्ष नहीं होना चाहिए। इस पर वे विचार करें।

105 वर्ष की उम्र में निधन, अंतिम संस्कार आज,पीएम मोदी कर चुके सम्मानित

आजाद हिंद फौज के सिपाही राधाकृष्ण सिंह शास्त्री नहीं रहे

बैतूल (नप्र)। बैतूल में आजाद हिंद फौज के सिपाही राधाकृष्ण (राधा किशन) सिंह शास्त्री का 105 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने सोमवार सुबह अंतिम सांस ली। राधाकृष्ण सिंह का जन्म 1 जनवरी 1920 को बर्मा (म्यांमार) के पेंगु जिले में हुआ था। उनके परिवार की जड़ें बिहार से जुड़ी थीं और वे अपने माता-पिता के साथ भारत-बर्मा आते-जाते रहते थे।

प्रधानमंत्री ने किया था सम्मानित- स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में आज़ाद हिंद फ़ौज की 75वीं वर्षगांठ पर दिल्ली में उन्हें सम्मानित किया था। जीवन के अंतिम दिनों तक वे 'जय हिंद' के नारे के साथ लोगों का अभिवादन करते थे और आजाद हिंद फौज की वर्दी जैसा सफेद पैंट-शर्ट पहनना उनकी आदत बन गई थी। उनके परिवार में दो बेटे और एक बेटी हैं।

नेताजी के साथ मोर्चे पर लड़ी लड़ाई- 1943 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के बुलावे पर राधाकृष्ण सिंह ने आज़ाद हिंद फ़ौज जॉइन की थी। सिंगापुर में भर्ती होकर उन्होंने चनमारी नामक सैन्य प्रशिक्षण लिया और नेताजी के नेतृत्व में इम्फाल और कोहिमा मोर्चों पर अंग्रेजी सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस दौरान वे तीन महीने अंग्रेजों की जेल में भी रहे, जहाँ से क्रांतिकारी भोला भाई देसाई के प्रयासों से रिहा हुए। जापान के आत्मसमर्पण के बाद आज़ाद हिंद फ़ौज को पीछे हटना पड़ा और बर्मा छोड़ने से पहले नेताजी ने अपने सैनिकों से अंतिम मुलाकात की–उसी समूह में राधाकृष्ण भी शामिल थे।

भारत लौटकर संघर्षपूर्ण जीवन बिताया- आज़ादी के बाद उन्होंने करीब 20 साल बर्मा में संघर्षपूर्ण जीवन बिताया और अंततः लालबहादुर शास्त्री की प्रेरणा से भारत लौटे। भारत में शरणार्थी के रूप में उन्हें बैतूल जिले के पहाड़पुर गांव में 5 एकड़ भूमि दी गई। जीविका चलाने के लिए वे पाथाखेड़ा की कोयला खदान में मजदूर बने और वहीं से रिटायर हुए।

ग्वालियर में ज्वेलरी शॉप में 10 मिनट में 25 फायर...

आगरा के कैटर्स को गोली लगी ; घटना के विरोध में सराफा कारोबारियों ने बाजार बंद किया

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के उपनगर मुरार के सदर बाजार में सोमवार दोपहर नकाबपोश बाइक सवार बदमाशों ने सराफा दुकान को टारगेट कर 10 मिनट में 25 गोलियां चलाई। चार गोलियां दुकान में लगीं, जबकि तीन से चार गोलियां आसपास की दुकानों में लगी हैं। आगरा के एक कैटर्स गुड्डू जैन गोली लगने से घायल हो गए।

सदर बाजार में बाइक से आए बदमाशों ने पहले तो हवा में पिस्टल और देशी कट्टे लहराते हुए ताबड़तोड़ फायरिंग की। इसके बाद सर्राफा कारोबारी महावीर जैन की दुकान को टारगेट कर गोलियां चलाई।

फायरिंग का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है। एक बदमाश ज्वेलरी शॉप में घुसकर गोली मारते हुए दिखाई दे रहा है। वीडियो में दुकान पर मौजूद एक व्यक्ति कुर्सी सामने अड़ाकर खुद की जान बचाता नजर आ रहा है। घटना के

बाद पुलिस ने बाइक सवार बदमाशों की पहचान कर पूरे शहर में नाकाबंदी कर दी है। व्यापारियों ने दुकान बंद कर विरोध विरोध प्रदर्शन किया।

शॉर्ट एनकाउंटर में पकड़े गए बदमाश का रिएक्शन- बताया जा रहा है कि पुलिस ने सोमवार सुबह शॉर्ट एनकाउंटर में बदमाश कपिल यादव को पकड़ा है। इसके बाद बदमाश के पिता और अन्य रिश्तेदारों ने व्यापारी का नाम लेकर धमकाया था। बदमाश के परिजन को कहना था कि शॉर्ट एनकाउंटर कारोबारी महावीर जैन के इशारे पर हुआ है।

व्यापारियों ने दुकान बंद कर विरोध प्रदर्शन किया- गोलीबारी के बाद बाजार में दहशत का माहौल है। व्यापारियों ने दुकान बंद कर विरोध जताया है। सूचना मिलते ही एसपी ग्वालियर धर्मवीर सिंह, एसपी अनु बेनीवाल सहित बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी सदर बाजार पहुंचे। पुलिस व्यापारियों को समझाकर माहौल को शांत करने का प्रयास कर रही है।